(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 54, अंक 5, नवम्बर, 2018
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

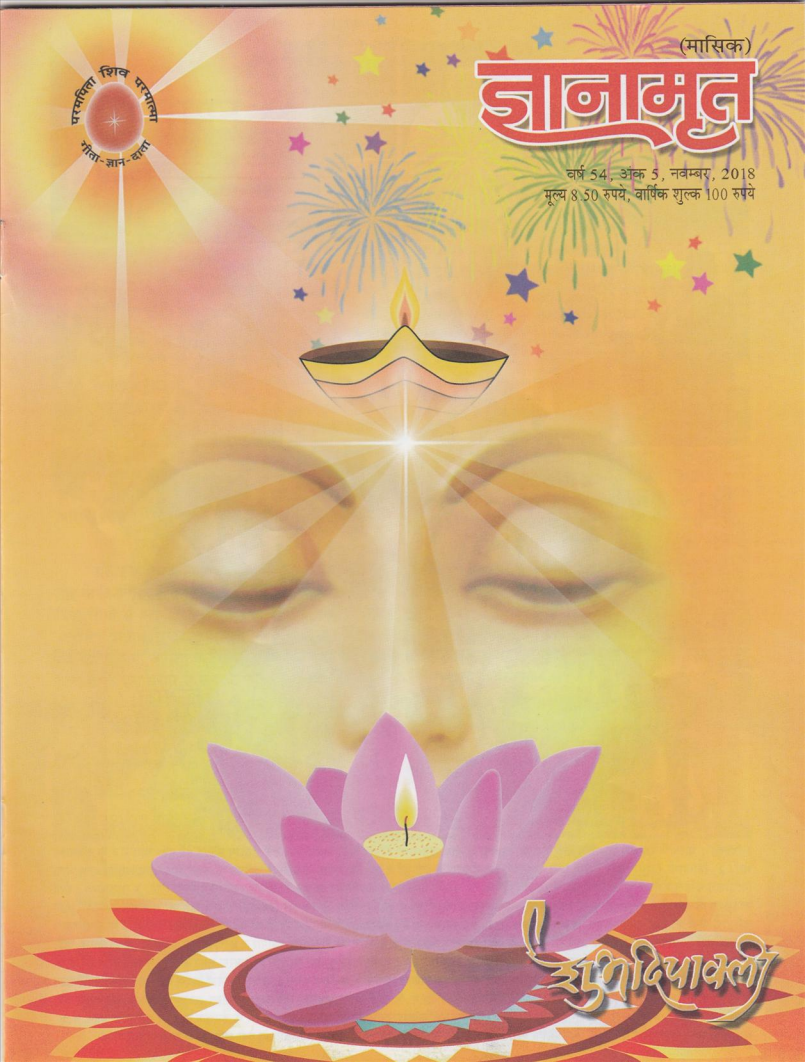

1.**दिल्ली** : भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता रामनाथ कोविंद के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. आशा बहन उन्हें ईश्वरीय सौगात देते हुए। साथ में ब्र.कु.बृजमोहन भाई। 2. **शिकागो (अमेरिका)** : वर्ल्ड हिन्दू कांग्रेस में ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. उषा बहन। मंचासीन हैं इस्कान के संचार मंत्री भ्राता अनुत्तम दास, घाना (अफ्रीका) में हिन्दू मोनेस्ट्री के प्रतिनिधि, जर्मनी के आध्यात्मिक गुरु स्वामी परमअद्वैती तथा गीतानंद आश्रम, इटली की स्वामिनी हंसनन्दा गिरि। 3.**सांताक्रुज** : ईशा फाउंडेशन के संस्थापक श्री सद्गुरु जग्गी वासुदेव के साथ ज्ञान-चर्चा करती हुई ब्र.कु मीरा बहन। 4.**आगरा (ईदगाह)** : उत्तराखंड की राज्यपाल महामहिम बहन बेबी रानी मौर्या को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. अश्विना बहन। 5.**सिवान** : केंद्रीय कपड़ा मंत्री बहन स्मृति ईरानी जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु सुधा बहन। 6.**आइजोल** : अमृत महोत्सव का उद्घाटन करने के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं मिजोरम के राज्यपाल महामहिम भ्राता के. राजशेखरन, ब्र.कु.विनोद भाई, ब्र.कु.सत्यवती बहन, ब्र.कु.राकेश भाई तथा ब्र.कु. नर्मदा बहन। 7.**राजनांदगांव** : राजयोग ट्रेनिंग सेंटर के भूमि शुद्धिकरण समारोह का उद्घाटन करते हुए छ.ग. के मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह, ब्र.कु.कमला बहन, ब्र.कु. हेमलता बहन, ब्र.कु.आशा बहन तथा ब्र.कु. पुष्पा बहन। 8.**रायपुर** : 'वाह जिंदगी वाह' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.कमला बहन, भ्राता सुरेश ओबरॉय, छ.ग. के कृषि व जल संसाधन मंत्री भ्राता बृजमोहन अग्रवाल, महापौर भ्राता प्रमोद दुबे, ब्र.कु. हेमलता बहन, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य। 9.**इंदौर** : किसान यशशक्तिकरण अभियान का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु हेमलता बहन, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. राजू भाई, भ्राता विजय सिंह चौरसिया, उपसंचालक कृषि विभाग, ब्र.कु. उषा बहन, डॉ. नरेंद्र धाकड़, उप-कुलपति देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी तथा अन्य।

संजय की कलम से –

कमल समान पवित्र जीवन

अन्य पुष्पों की अपेक्षा कमल की यह विशेषता है कि वह पानी में रह कर भी पानी से ऊपर उठकर अलिप्त रहता है। कमल का एक नाम 'पंकज' भी है क्योंकि यद्यपि वह कीचड़ में जन्म लेता है तथापि कीचड़ उसे स्पर्श नहीं कर पाता। इसलिये भारत के आध्यात्मिक साहित्य में अथवा धार्मिक वाङ्मय में कमल को अलिप्त एवं पवित्र जीवन का प्रतीक माना गया है।

कमल में एक और भी विशेषता है, इस फूल का अपना ही एक कुटुम्ब अथवा परिवार होता है जिसके सदस्य कमल-ककड़ी और कमल गट्टा इत्यादि होते हैं, परन्तु इन सबके संग रहते हुए भी कमल इनसे न्यारा और प्यारा बना रहता है। इसी प्रकार, जो लोग मोह, मद, मत्सर इत्यादि से भरे इस संसार में अपने पारिवारिक जीवन के कर्त्तव्यों को निभाते हुए भी इनसे अलिप्त रहते हैं, वे भी कमल के समान ही हैं।

एक ग़लत धारणा

संसार में कुछ लोग ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि यहाँ तो मोह के बिना गृहस्थी को चलाया ही नहीं जा सकता, क्रोध के बिना लोगों से अपनी बात मनवाई ही नहीं जा सकती और अहंकार के एक सुन्दर रूप 'रोब' के बिना दूसरों से काम निकाला ही नहीं जा सकता। गोया उनके कहने का भाव यह होता है कि इस संसार में मन को शुचिता अथवा पवित्रता में रखते हुए मनुष्य सांसारिक कर्त्तव्यों को निभा ही नहीं सकता। परन्तु वास्तव में मानव की यह मान्यता उसे आत्मिक विकास के मार्ग में आगे नहीं बढ़ने देती और इसलिए यह हानिकर है। हम देखते हैं कि हरेक मनुष्य में पवित्रता को अपनाने की इच्छा अवश्य होती है। यह अलग बात है कि किसी व्यक्ति का मन इतना दुर्बल हो गया हो कि वह आज के दूषित वातावरण के रंग में रंग जाता हो। परन्तु यह दुर्बलता मनुष्य की अन्तरात्मा का स्वाभाविक लक्षण नहीं है, तभी तो प्राय: हरेक व्यक्ति के मन में बुराई के प्रति विरोध अथवा विद्रोह की भावना उत्पन्न हुआ करती है। अत: पुरुषार्थ की सही दिशा तो मनोबल को बढ़ाकर पवित्रता के पथ को अपनाना ही है, छोड़ना नहीं।

उच्च लक्ष्य से उच्च लक्षण

जो मनुष्य कमल-सम जीवन को अपना लक्ष्य मान लेता है, उसे संसार की कोई भी वस्तु अपने प्रलोभन के कुचक्र में नहीं फँसा सकती बल्कि वह व्यक्ति जिन वस्तुओं को अनिवार्य मानता है अथवा जिनकी आवश्यकता अनुभव करता है, वह मोहग्रस्त हुए बिना तथा इन्द्रियों का दास बने बिना ही उनका उपयोग करता है; उसे उनकी तृष्णा सताती नहीं। वह कर्त्तव्यपरायण होने के भाव से, परोपकार भाव से और लोक-संग्रह को ध्यान में रखते हुए, समाज सेवा के विचार से अपने सद्गुणों के विकास का लक्ष्य सामने रखते हुए कुशलतापूर्वक कार्य करता रहता है। वह दिनोंदिन आत्मा को बलिष्ठ बनाता है और दुर्गुणों तथा दुर्बलताओं से ऊँचा उठता जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि मनुष्य का जैसा लक्ष्य हो वैसे उसमें लक्षण आने लगते हैं। ■■■

अमृत-सूची

- दिव्य गुणों की धारणा (सम्पादकीय) 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के 7
- बुरा मत मानो 9
- पत्र सम्पादक के नाम 10
- वैश्विक शिखर सम्मेलन (समाचार) 11
- परमात्मा का अद्भुत चमत्कार 16
- ज्ञानयुक्त - व्यर्थमुक्त 17
- क,ख,ग,घ का अर्थ 18
- कैसी यह दीवाली है (कविता) 20
- भगवान ने कहा, बच्ची साफ दिल और सच्ची है 21
- दूसरों के लिए कुछ करने का सपना 23
- आपसी सम्बन्धों में समरसता 25
- श्रद्धांजली 26
- मेरे संग संग चलते हैं बाबा 27
- ''मेरे साथ क्या हो रहा है'' इसे छोड़ ''मुझे क्या करना है'' इस पर ध्यान दो 28
- कहीं गाड़ी छूट न जाए (कविता) 29
- बुराई का अभिमान और अच्छाई का अभिमान 30
- सचित्र सेवा समाचार 32
- दिव्य अनुभूतियों को बढ़ाते चलें 34

सम्पादकीय . . .

दिव्य गुणों की धारणा

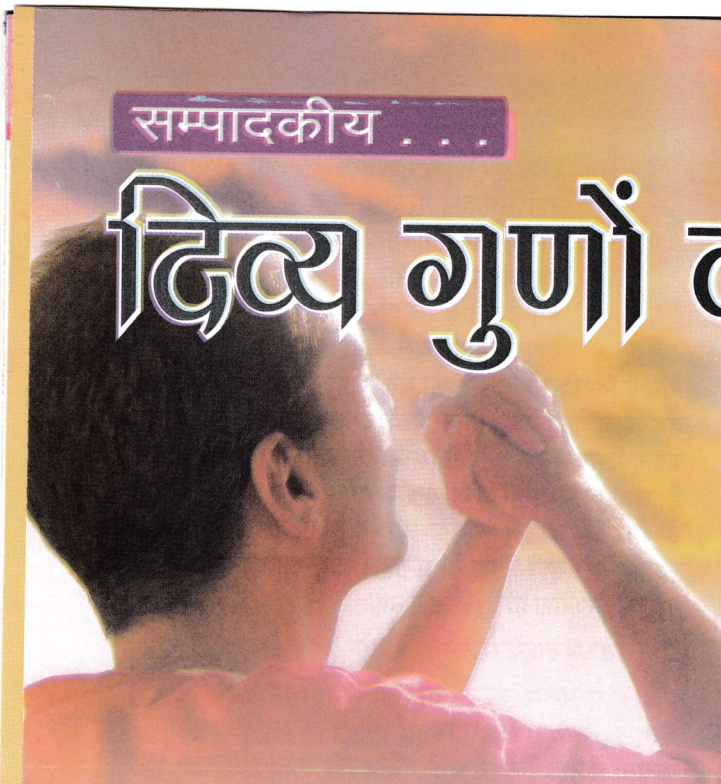

हम आम बोलचाल में सभी गुणों को 'दैवी गुण' कह देते हैं परन्तु वास्तव में उनमें से कुछ गुण दैवी गुण न होकर 'ईश्वरीय गुण' हैं और कुछ 'सद्गुण' अथवा 'मानवीय गुण' हैं। ईश्वरीय गुण इन सभी में से उच्च हैं और विशेष कल्याणकारी हैं। उनकी धारणा से ही एक नये, सतयुगी, दैवी समाज की स्थापना होती है। अत: जबकि हम सतयुग की स्थापना के कार्य में लगे हैं तो हमें गुणों के इस भेद को जानकर ईश्वरीय गुणों की धारणा पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

मानवीय गुण, दैवी गुण और ईश्वरीय गुण में अन्तर

इस भेद को स्पष्ट करने के लिए कुछेक गुणों को उदाहरण के रूप में सामने रखना श्रेयस्कर होगा। इसी उद्देश्य से हम 'वीरता' ही पर विचार कर लेते हैं। यह तो निश्चित है कि केवल वही मनुष्य 'वीर' हो सकता है जो अभय हो। यह तो मानना पड़ेगा कि मृत्यु को सामने देखते हुए भी उससे न डरना एक बहुत ही बड़ा गुण है। देश के लिए अपनी जान देने को तैयार हो जाना, एक बहुत ही सराहनीय साहस है। इसी प्रकार, कदम-कदम पर मार्ग की कठिनाइयों, संकटों एवं खतरों का सामना करते हुए हिमालय की चोटी की ओर बढ़ते जाना भी अदम्य साहस, प्रबल उत्साह और निर्भय स्थिति का प्रतीक है। जिन मनुष्यों ने पहले-पहले अन्तरिक्ष यान में चाँद पर जाना स्वीकार किया, उन्होंने कितने भीषण खतरे का सामना किया! अत: निश्चय ही 'वीरता', 'निर्भयता' अथवा 'साहस' महान मानवीय गुण है। परन्तु हम इसे 'दिव्य गुण' नहीं कहेंगे क्योंकि इस गुण को धारण करने वाले व्यक्ति 'देवता' नहीं हैं, न ही वे इसकी धारणा से देवता बन जाते हैं।

पुनश्च, सतयुग के देवताओं में भी यह गुण इस रूप में नहीं होता क्योंकि उनके सामने भय की कोई स्थिति ही उपस्थित नहीं होती; ऐसी वीरता प्रदर्शित करने का कोई अवसर ही उनके सामने उपस्थित नहीं होता।

फिर हम देखते हैं कि यद्यपि वीरता एक मूल्यवान मानवीय गुण है तथापि इस गुण की धारणा से किसी नये समाज की स्थापना नहीं हुई। वीरता का गुण धारण अथवा प्रदर्शित करके व्यक्तियों, जातियों अथवा देशों में रक्तपात हुआ है, शीत युद्ध छिड़ा है अथवा होड़ लगी है। वे अपने वीरों की महिमा करके दूसरों की उकसाहट के निमित्त बने हैं और जोश अथवा अहंभाव से अभिभूत हुए हैं। कभी तो वीरता के नशे में वे धीरज को, सहनशीलता को, अहिंसा को अथवा भ्रातृत्व को खो बैठे हैं और कभी वे दूसरों को दीन मानकर मिथ्या गर्व के वशीभूत हुए हैं। एक वीर से दूसरे वीर ने टक्कर लेने की कोशिश की है अथवा उसका रिकार्ड तोड़ने ही का यत्न किया है। उनके मन में खुशी की बजाय ईर्ष्या ने स्थान लिया है और एक ने दूसरे की वीरता को अपने मान-अपमान का प्रश्न बना लिया है। वह सब न भी हो तो ऐसे वीरों की गाथाएँ कोई देव-गाथाएँ नहीं हैं। उनका यशोगान कोई देवगान नहीं है। यद्यपि कवियों ने देवों को भी अपनी कृतियों में इस गुण से अलंकृत किया है तथापि हम जानते हैं

कि वास्तव में अहिंसक देवताओं के गुण क्या होते हैं।

गुणों की ईश्वरीय व्याख्या

इसी 'वीरता' नामक गुण की नई व्याख्या देकर अथवा इसके प्रति नया दृष्टिकोण देकर शिव बाबा ने इसे सद्गुण के रूप में हमारे सामने रखा है। जब हम काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष आदि का सामना करते हैं और इन पर विजय प्राप्त करते हैं, तब यही गुण 'सद्गुण' बन जाता है। जब हम आध्यात्मिक यात्रा के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने के लिए इन विकारों रूपी संकटों को या मार्ग की कठिनाइयों को पार करते हैं तो हम सात्त्विक रूप में 'महावीर' होते हैं। ऐसे वीर को भी 'अभय' तो होना ही पड़ता है। वह लोक-निन्दा के भय और समाज द्वारा बहिष्कार या तिरस्कार के भय को पार करता है। उसकी यह परिस्थिति रण-क्षेत्र के भय की अपेक्षा अधिक समय तक बनी रहती है। वह विरोधी मन वालों के अत्याचारों का भी सामना करता है और उन द्वारा

किए गए अट्टहास का तथा असहयोग का भी वीरता एवं साहस से मुकाबला करता है। स्थूल रूप में भय की बात तो एक ओर रही, शिव बाबा ने तो बताया है कि योगी को सभी प्रकार की आशंकाओं से भी ऊपर उठना पड़ता है। ''क्या होगा, कैसे होगा, पता नहीं सफलता होगी या नहीं होगी'' – इस प्रकार के सूक्ष्म भय की अभिव्यक्ति वाले प्रश्न भी योगी के मन में नहीं उठ सकते। वह तो माया को चुनौती देने वाले महावीर के रूप में आध्यात्मिक शक्ति की विजय के निश्चय में स्थित होता है। वह एक अकेला असंख्य विघ्नों से जूझने को उद्यत होता है और भविष्य के खटके तथा वर्तमान की हलचल में भी वह अंगद के समान अटल होकर खड़ा हो जाता है। योद्धा तो रण-क्षेत्र में मृत्यु से न डरते हुए स्वयं को मृत्यु से बचाता है परन्तु आध्यात्मिक पुरुषार्थ वाला महावीर तो कदम-कदम पर मरने अथवा 'मरजीवा' बनने को तैयार रहता है। इस प्रकार की वीरता को आप चाहें तो इस अर्थ में दिव्य गुण कह सकते हैं कि इससे मनुष्य का जीवन दिव्य बनता है और वह भविष्य में देवता बनता है।

दूसरा उदाहरण

इसी चर्चा के अधिक स्पष्टीकरण के लिए अब एक और उदाहरण पर विचार कीजिये। गीता में गुणों की चर्चा करते हुए अभय के अतिरिक्त दान को भी दैवी गुणों में गिना गया है। परन्तु हम जानते हैं कि देवताओं के लोक में तो इस गुण की अभिव्यक्ति का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि वहाँ तो कोई दुखी और दरिद्र होता ही नहीं कि उसे 'दान' दिया जाए। दान तो एक मानवोचित गुण है क्योंकि इस मनुष्य लोक में ही दीन-दु:खी, असहाय और असमर्थ लोग होते हैं जिन पर दया करने और जिन्हें दान देने की आवश्यकता है। फिर, जिस रूप में मनुष्य पिछले दो युगों से दान-पुण्य करते आये हैं, उससे तो नये, सतयुगी एवं दैवी समाज की पुनर्स्थापना हुई नहीं बल्कि शोषक एवं शोषित दो वर्ग बने रहे हैं अथवा समाज दानी और दरिद्र – इन दो भागों में विभाजित रहा है। ऐसे समाज में जो अधिक दान करता हो, उसे लोग 'दानवीर' तो कहते रहे हैं परन्तु इस प्रकार के दान से और ऐसी वीरता से संसार स्वर्ग तो बना नहीं।

अब शिव बाबा ने इस गुण की भी हमें नई व्याख्या दी है। उन्होंने हमें समझाया है कि ज्ञान, गुण और योग का दान ही ऐसा दान है जिससे कि सतयुग की स्थापना हो सकती है

क्योंकि ऐसा दान लेने वाला भी दीन-हीन नहीं बना रहता बल्कि वह ऐसा समर्थ बन जाता है कि दूसरों को भी ज्ञान धन देने के योग्य हो जाता है। ऐसा दान देने वाले के मन में भी आत्म-ग्लानि नहीं होती क्योंकि यह धन ईश्वर का दिया हुआ है; यह किसी मनुष्य की निजी जायदाद नहीं है। यह दान लेने वाला सदा के लिए मांगना बन्द कर देता है और दान देने वाला भी स्वयं को 'दाता' नहीं मानता बल्कि स्वयं को निमित्त-मात्र मानता है। यों आम बोलचाल में लोग सहायता देने के कर्म को 'योगदान' अथवा 'सहयोग' कहते तो हैं परन्तु वे योग का दान तो देते नहीं, इसलिए उनके संदर्भ में 'योगदान' अथवा 'सहयोग' शब्द में 'योग' शब्द निरर्थक ही रह जाता है। परन्तु ये दोनों शब्द (योगदान और सहयोग) इस बात के सूचक हैं कि वास्तव में 'योग' का दान अथवा योग द्वारा सहायता ही विशेष रूप से सहयोग है। इस प्रकार के दान अथवा सहयोग से ही मनुष्यात्मा का तथा विश्व का कल्याण होता है और सतयुग की स्थापना होती है। ऐसा दान सद्गुण है और ईश्वरीय गुण भी है क्योंकि जब परमपिता परमात्मा अवतरित होते हैं तो वे ऐसा दान देते हैं और इस अर्थ में ही हमें 'महादानी', 'वरदानी' या 'विश्व-कल्याणी' बनने के लिए कहते हैं। इसी प्रकार से 'सेवा', 'यज्ञ', 'त्याग' इत्यादि गुणों की भी शिव बाबा ने हमें नई व्याख्या दी है।

कुछेक अन्य उदाहरण

अब सहनशीलता नामक गुण पर विचार कीजिये। सतयुग में देवी-देवताओं को कुछ भी सहन नहीं करना पड़ता क्योंकि उनका न तो विरोध होता है, न ही उनके सामने कोई विघ्न होते हैं। अत: यह गुण भी एक सद्गुण ही है। यद्यपि इस गुण को धारण करने वाला मनुष्य 'देवता पद' की ओर बढ़ता है।

हाँ, हर्षितमुखता एक सद्गुण भी है और दैवी गुण भी। इसी प्रकार, सन्तुष्टता भी सद्गुण और दैवीगुण दोनों है। किन्तु देवताओं की हर्षितमुखता एवं सन्तुष्टता स्वाभाविक है जबकि अब संगमयुग में हम इस गुण को ऐसी परिस्थितियों में भी धारण करने का पुरुषार्थ करते हैं जो परिस्थितियाँ इसकी विरोधी अथवा बाधक हों। पुनश्च, देवताओं की और हमारी हर्षितमुखता एवं सन्तुष्टता के कारण, आधार एवं स्वरूप में अन्तर है।

इसी प्रकार अनासक्ति, निरहंकारिता या निर्विकारिता दैवी गुण भी हैं और सद्गुण भी। साथ ही साथ ये ईश्वरीय गुण भी हैं क्योंकि ईश्वर सदा निर्विकार, नम्रचित्त और निरहंकार है।

संक्षेप में कहने का भाव यह है कि हम मानवीय गुणों को भी ईश्वरीय गुणों के रूप में धारण करें तभी हम दूसरों के कल्याण के लिए भी निमित्त बन सकेंगे और सतयुगी सृष्टि की पुन: स्थापना के कार्य को कर सकेंगे।

विशेष ईश्वरीय गुण

इस पर भी विशेष तौर पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि करुणा अथवा दूसरों के कल्याण की भावना ही ऐसा मुख्य गुण है जिसके साथ लगकर दूसरे गुण स्वत: आना शुरू कर देते हैं। जिसमें करुणा हो, वह दानी और महादानी भी होता है और सहयोगी भी। करुणाशील ही त्यागी भी होता है और सेवा-रत भी। फिर जिसमें त्याग और सेवा-भाव हो वह व्यक्ति नष्टोमोह: भी हो जाता है। ऐसे व्यक्ति के पास व्यर्थ चिन्तन, व्यर्थ कर्म करने का समय कहाँ? करुणा रूपी ईश्वरीय गुण को धारण करने वाला व्यक्ति ईर्ष्या-द्वेष और निन्दा-चुगली से बचकर रहता है। उसे न मान की इच्छा होती है, न पद या शान की; उसका मन तो स्वभाव से ही दूसरों के प्रति प्रेम और सेवा-भाव से प्लावित हो उठता है। ऐसे व्यक्ति का न किसी से वैर होता है, न किसी से शत्रुता। तब निश्चय ही वह न किसी को दु:ख देता है और न लेता है। वह तो दु:ख मिटाने और सुख देने के ईश्वरीय कार्य को ही अपना कार्य मानकर उसी में लगा रहता है। ऐसा ही व्यक्ति प्रभु-पसन्द, लोक-पसन्द और मन-पसन्द बन सकता है। अत: रहमदिल, करुणाशील अथवा महादानी-वरदानी बनना ही सही पुरुषार्थ का पथ अपनाना है। ■■■

स्नेही पाठकों को आत्मा रूपी दीपक को प्रकाशित करने के यादगार पर्व दीपावली की कोटि-कोटि शुभकामनाएँ एवं शुभ बधाई!

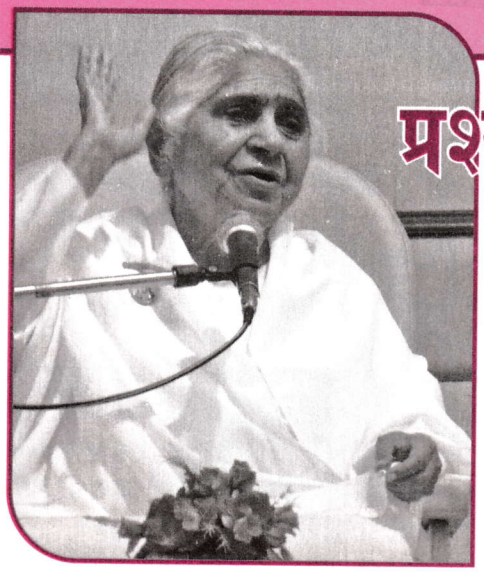

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

प्रश्न- सेवा में साथ देने वाले मुख्य चार गुण कौन-कौन-से हैं?

उत्तर- बाबा के कई ऐसे चरित्र हैं, जो अचानक देख अन्दर से आता, बाबा कमाल है आपकी। जिस घड़ी बाबा की याद में बैठते हैं, तो सारी सभा में किसका भी हिलने का मन नहीं करता है। अचल-अडोल स्थिति में सब बैठे हैं। हर आत्मा देह, देह के सम्बन्ध से न्यारी हो करके चल रही है। पहले काम, क्रोध तो हैं ही खराब, लोभ और मोह भी कम नहीं हैं। अभी साक्षी होकर के देखा है, हम उनसे फ्री हैं। अपने को अच्छी तरह से देखो, क्या चाहिए? दाल-रोटी खाना, शिवबाबा के गुण गाना। शिवबाबा हमको जिन गुणों की धारण करने के लिये प्रेरणा देता है, वे तुरंत धारण करने हैं। न किसका अवगुण हम देखें, न मेरा अवगुण कोई देखे। गुणचोर बनना है। सबके गुण देख-देख करके अपने आपको शृंगारो, यह बड़ा अच्छा है। गुणों में भी देखा है धैर्य, सत्यता, नम्रता, मधुरता अपने आप सेवा में साथ दे रहे हैं। मुख्य बात है धैर्य, जल्दी नहीं करो। वरी, हरी, करी अच्छे नहीं हैं। कोई भी प्रकार की वरी (चिंता) नहीं करनी है।

प्रश्न- ड्रामा की नॉलेज के क्या-क्या फायदे हैं?

उत्तर- ड्रामा में हरेक सीन बड़ी न्यारी और प्यारी लगती है। इससे ड्रामा खेल लगता है। ड्रामा की नॉलेज न्यारा-प्यारा बना देती है। ड्रामा की नॉलेज ने व्यर्थ चिंतन, परचिंतन से फ्री कर दिया है। यह क्यों हुआ? क्या हुआ? ड्रामा समझो। मैंने देखा है, सवेरे से रात्रि तक कराने वाले को जो कराना है, करा ही रहा है, वो बहुत होशियार है। कराने वाला करा रहा है, यह सिर्फ शब्द नहीं कहती हूँ परन्तु बड़ा वन्डर लगता है कि कैसे करा रहा है! हम करने वाले अचल-अडोल रूहानी तख्त पर साक्षी हो करके पार्ट प्ले कर रहे हैं। ऐसे नहीं, सिर्फ बैठ जाते हैं, पार्ट प्ले कर रहे हैं आर्ट के रूप में। ड्रामा की नॉलेज से बाबा को साथी बनाया है। ड्रामा की नॉलेज से अचल-अडोल रहने का नेचुरल नेचर बन जाता है, तो कोई भी बात बड़ी नहीं लगती है।

हमारी यह गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ बहुत अच्छी है। मैं 102 साल की हो गयी हूँ, अब भी स्टूडेन्ट लाइफ है माना सारी लाइफ ही स्टडी में सफल हो रही है। मैं कभी टायर्ड नहीं हुई तो रिटायर्ड क्यों होंगी! सेवाधारी के हिसाब से पहले त्यागी फिर तपस्वी फिर सेवाधारी, यह तीनों ही साथ-साथ हों। अभी-अभी त्यागी, अभी-अभी तपस्वी और सेवा – वायुमण्डल वायब्रेशन से अपने आप बाबा करा रहा है।

सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हिम्मते बच्चे मददे बाप, नियत साफ मुराद हासिल। याद से याद मिलती है क्योंकि सच्ची दिल की याद में कोई फरियाद नहीं होती है। यह याद, समय अनुसार दुश्मन को भी मित्र बनाने वाली है। सारे संसार में हमारा कोई दुश्मन नहीं है। सभी मित्र हैं। तो हरेक दिल से पूछे, मैं कौन हूँ, मेरा कौन है! जब मैं आत्मा हूँ तो देह से न्यारा हूँ। तो बाबा कहता है, हे आत्मा! तू मेरी सन्तान हो परन्तु वह बचपन के दिन भुला न देना। हरेक को बहन-भाई की दृष्टि से देखो, बहन-भाई का यह सम्बन्ध भी संगमयुग पर कितने फायदे वाला है। एक-दो को देख कितनी खुशी होती है!

हम सबकी स्टूडेन्ट लाइफ है। भले कोई की उम्र 60 से ऊपर हो या कोई उम्र में छोटा हो पर वो भी स्टूडेन्ट, वो भी स्टूडेन्ट। साक्षी होकर देखते हैं, हमारा आपस में स्टूडेन्ट लाइफ में सम्बन्ध बहुत अच्छा है। बैठ के आपस में रूहरूहान करते हैं। रूहरूहान में ज्ञान की गहराई में जाते हैं। जितना गहराई में जाते हैं तो लगता है, बाबा को ज्ञानी तू आत्मा प्रिय लगता है। यह देह के सम्बन्ध से न्यारा बनाने वाली नॉलेज है। संगमयुग पर कोई-कोई बातें इतनी अच्छी लगती हैं जो जीवन-यात्रा में कदम-कदम पर कमाई करा रही हैं। समय की पहचान माना स्वयं की पहचान। अभिमान नहीं है, देही-अभिमानी की स्थिति से सहजयोगी हैं, कैसी अच्छी लाइफ है!

प्रश्न- दादी जी, आपको सारी दुनिया में सेवा करने का भाग्य मिला है, उसके कुछ अनुभव सुनाइये?

उत्तर- फुलस्टॉप देने की स्थिति वा विधि बहुत अच्छी है, क्वेश्चन मार्क कभी आता ही नहीं है। बाबा ने अति मीठा, अति प्यारा बना दिया है। जैसे शिव भोला भगवान है, ऐसे हम बच्चे भी भोले हैं, भूल नहीं करते हैं। मुझे त्यागी, तपस्वी, सेवाधारी का रूप अच्छा लगता है। सफेद कपड़ा, खीसा खाली, हम हैं सारे विश्व के माली, यह बाबा ने अनुभव कराया है। सफेद कपड़ा बहुत अच्छा है और कभी मेरे हाथ में पर्स नहीं देखा होगा। कुर्ते में जेब है पर मुझे जेब को हाथ लगाना भी नहीं आता है, क्या करेंगे, सफेद कपड़ा, जेब खाली है। पर जब जापान गई थी तो वहाँ एक बहुत बड़ी सभा थी जिसमें एक बहुत बड़ा विद्धान था, वो लेक्चर कर रहा था। उसके बाद मुझे बोलना था। वह भी वन्डरफुल अनुभव था। हम कहीं पर भी जायेंगे तो सेवार्थ, हमको न शॉपिंग करनी होती है, न ही कोई साइडसीन। सारी लाइफ में, सारी दुनिया में सेवा करने का भाग्य मिला है परन्तु मैं नहीं समझती हूँ कि कभी कहीं किसी शापिंग सेन्टर पर पांव रखा हो। मुझे पता ही नहीं है। क्या चाहिए, क्या करेंगी? बाबा ने स्पेशल ट्रेनिंग दी है। कोई चिंता नहीं, कोई चिंतन नहीं। कोई स्वार्थ नहीं है, नष्टोमोहा, अनासक्त वृत्ति की जीवन कितनी अच्छी और न्यारी, बाबा की प्यारी है। किसी को कुछ और नहीं दे सकते हैं पर रूहानी प्यार तो दे सकते हैं। दृष्टि द्वारा, मुस्कराते हुए चेहरे से मिलन मना सकते हैं।

प्रश्न- वर्तमान समय के हिसाब से पुरुषार्थ क्या है?

उत्तर- कभी निगेटिव ख्याल न आवे। पॉजीटिव इतना पॉवरफुल, जो निगेटिव को भी पॉजीटिव बना देवे, इतनी अन्दर लगन की अग्नि हो। अगर हलुआ बनाना हो तो क्या करेंगे? बिना अग्नि के सिर्फ घुमाते रहें तो नहीं होगा। समय ऐसा है, शान्ति की शक्ति के वायब्रेशन यहाँ से सारे विश्व भर में फैलते जा रहे हैं। अभी हम बाबा की फोटोकॉपी बनें, सेम जैसे बाबा। अभी यह काम आप कर सकते हो। कभी भी न इच्छा, न ममता हो। क्या होगा, कैसे होगा, यह सोच क्या है? ममता होगी तो सोचेंगे कि यह छूट न जावे, यह मेरे पास रहे। कोई भी बात सामने आवे तो साधारण संकल्प भी न हों, श्रेष्ठ संकल्प हों। साधारण से टाइम व्यर्थ जा सकता है इसलिए संकल्प भी शान्त। संकल्प में शान्ति की शक्ति हो। कोई भी बात जब बुद्धि में स्पष्ट है तो दिल में सच्चाई-सफाई ऑटोमेटिक काम करती रहती है। करना नहीं पड़ता है। मन शान्ति की शक्ति पैदा करता है तो बुद्धि नेचुरल शान्त और स्थिर है। स्थिर होने से कभी भी डोलायमान, चलायमान नहीं होती है। नहीं तो यह भी एक बीमारी है। संकल्प की क्वालिटी फर्स्टक्लास हो तो सफलता हुई पड़ी है। बुद्धि से अगर अचल हैं तो वन्डरफुल कार्य होंगे। कोई बात वा कुछ संकल्प आये और गये, पर अभी तक हमारी बुद्धि क्यों चल रही है? जो बात यहाँ आई और गई अर्थात् पास्ट इज़ पास्ट। अभी बाकी थोड़ा समय है कलियुग को जाने में। प्रकृति हलचल करेगी। हमें तो बाबा के साथ ऊपर जाना है। भले बाबा वहाँ बैठें, हम तो फिर से यहाँ आयेंगे परन्तु ऊपर जाने के लिए न सिर्फ चढ़ती कला हो बल्कि उड़ती कला हो। यह चेकिंग अपने चार्ट की रखनी जरूरी है।

प्रश्न- सतो और सतोप्रधान में क्या अन्तर है?

उत्तर- सतो और सतोप्रधान में बड़ा अन्तर है। थोड़ी भी कोई कमी मेरी है या किसकी भी है, वो देखी, सुनी वा सोची तो ऐसे करते-करते कभी-कभी सतो से रजो में आ जाते हैं। सतोप्रधान जो होंगे, बुद्धि को हिलने नहीं देंगे। अन्दर इतनी शक्ति है जो सहजयोग, राजयोग, कर्मयोग नेचुरल योग है। पुरुषार्थ नहीं है। योग माना ही क्या? कनेक्शन। कनेक्शन से लाइट आती है, माइट मिल जाती है। जिस घड़ी बाबा से कनेक्शन है तो लाइट-लाइट है। तो सतोप्रधान स्थिति औरों को भी खींचती है। यहाँ भी कोई-कोई आत्मायें हैं वो पहले एक समय पुरुषार्थी थी, अभी दूसरों के लिए पुरुषार्थ में एक मिसाल बन गयी हैं। ऐसे है ना, इसका नशा नहीं है परन्तु जो बात सही है वो कहने में कोई हर्जा नहीं है। जो सतोप्रधान होगा, वो जिसके संग में आया उसको वो रंग चढ़ गया। सतो वाला खुद कभी रजो-तमो में आ सकता है लेकिन सतोप्रधान के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। कोई-कोई के स्वप्न ऐसे होते हैं, कहेंगे, बहुत अच्छा था, वन्डर है, परन्तु ऐसी स्थिति बनाने के लिए तो मेहनत करनी पड़ेगी ना। ■■■

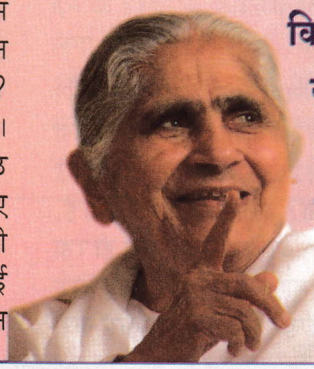

किसी को कुछ और नहीं दे सकते हैं पर रूहानी प्यार तो दे सकते हैं। दृष्टि द्वारा, मुस्कराते हुए चेहरे से मिलन मना सकते हैं।

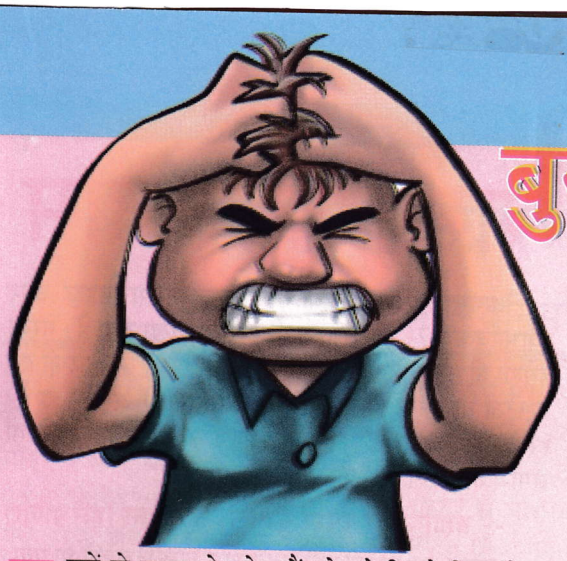

बुरा मत मानो

ब्रह्माकुमारी ललिता, विकासपुरी, नई दिल्ली

हममें से बहुत-से लोग हैं जो छोटी-छोटी बातों पर बहुत जल्दी नाराज हो जाते हैं बिल्कुल छुईमुई के पौधे की तरह। कभी देखा है छुईमुई का पौधा? उसको बस छू भर दो और वह सिकुड़ जाता है लेकिन उसकी यह विशेषता है कि थोड़ी देर में खुदबखुद पहले जैसी स्थिति में आ जाता है। लेकिन, कुछ लोग इस पौधे से ठीक विपरीत, रूठ तो पल भर में जाते हैं लेकिन मानते बहुत देर से हैं। निस्संदेह ऐसे लोग बहुत भावुक होते हैं, दिल के बहुत अच्छे होते हैं। ये लोग खुद भी ज्यादातर दूसरों की भावनाओं का ख्याल रखते हैं। शायद इसलिए वे दूसरों से भी ऐसी ही अपेक्षा भी रखते हैं। इनका मोम जैसा दिल जरा-सा सेक भी बर्दाश्त नहीं कर पाता। फट पिघल कर फैल जाता है।

हमें हमेशा तारीफ करने वाले लोग नहीं मिलेंगे और यह संभव भी नहीं कि एक व्यक्ति केवल तारीफ के लायक ही काम करे। कोई कितना भी फरफेक्ट क्यों न हो, गलती तो हो ही जाती है। हर कोई हमेशा सामने वाले के मन मुताबिक काम कर भी नहीं सकता। निंदा तो मिलती ही है। कोई हमारी कमी निकाले तो बुरा लगना स्वाभाविक है लेकिन रूठ कर बैठ जाना, किसी से बात न करना, सामने वाले को देख मुँह बना-बना कर अपनी नाराजगी दर्शाना तो कोई बुद्धिमत्ता नहीं।

पहला और सबसे आसान तरीका है, नजरअंदाज करना। किसी ने कुछ भी कहा, उसे कान के रास्ते से दिल तक मत लेकर जाओ। एक कान से सुना, दूसरे से निकालो। यह आसान नहीं है पर मुश्किल भी नहीं है। अपना काम सलीके से, अपनी योग्यता अनुसार मन से करो और मत सोचो कि किसको अच्छा लगेगा और किसको बुरा। अगर कुछ को वो जंचेगा तो कुछ उसमें से मीन-मेख भी जरूर निकालेंगे। जाने दो। लेकिन अगर कोई आपका अपना, आपका शुभचिंतक, आपका ध्यान किसी कमी की ओर दिला रहा है तो जरूर उसे महत्त्व दें, सुधार की कोशिश करें। परिणाम सुखद आएगा। एक संत ने तो यहाँ तक कहा है कि अपनी कमी को निकालने वाले को सदैव साथ रखिए। वह आपको सोने से कुंदन बना देगा यदि आपने सुधार की प्रक्रिया को जारी रखा तो।

दूसरा तरीका कठिन है लेकिन बहुत कारगर है। किसी ने आपके काम में कमी निकाली तो मुस्करा कर उसको शुक्रिया कहो कि आपने मेरे काम के बारे में इतनी गहराई से सोचा और मुझे और बेहतर करने के लिए प्रेरित किया। उसकी आलोचना का दिल से स्वागत करें। यकीन मानिए, आपके साथ उसके बहुत ही आदर्श संबंध स्थापित हो जाएंगे। आपकी प्रतिभा में भी निखार आएगा। लेकिन सावधान! अपने विवेक से आपको ऐसे लोगों का चुनाव करना होगा। केवल सुपात्र ही आपकी इस कोमलता का हकदार है। हर कोई नहीं। ध्यान रहे, लोग इसे आपकी कमजोरी समझ आपका नाजायज फायदा न उठाने पाएँ।

कभी-कभी कोई बहुत ही दिल कचोटने वाली बात कह देता है। ऐसे में हम चाह कर भी खुद पर नियंत्रण नहीं रख पाते। बहुत ही बुरा लग जाता है। ज्यादा बुरा तब लगता है जब हमें लगता है कि हमारी तो गलती ही नहीं थी। अगर वह व्यक्ति आपको मानता है तो बहुत ही विनम्रता और अपनेपन से अपना पक्ष रखें। उसका पक्ष भी जरूर सुनें। क्या पता आपकी ही गलती निकल आये। कई बार, किसी के कहने के बाद महसूस होता है कि कहीं न कहीं हम गलत हैं। कोई मना रहा है, बात करना चाह रहा है तो खुद भी थोड़ा झुक जाएँ। चलता है। कभी खट्टा, कभी मीठा।

यदि बार-बार रूठेंगे और मानेंगे नहीं तो कुछ समय बाद कोई मनाएगा भी नहीं। आप पर तमगा लगा दिया जाएगा, अरे इनका तो यही काम है, कुछ मत कहना, बुरा मान जाएंगे। लोग आपसे बचेंगे। खुल कर बात करने में हिचकिचाएंगे। ऐसे संबंधों का क्या लाभ? संबंधों में यदि

शेष भाग पृष्ठ 27 पर

पत्र सम्पादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका वस्तुत: ज्ञान का भण्डार है। जुलाई, 2018 के सम्पादकीय में सूक्ति के रूप में सुखी जीवन की अनेक बातें कही गई हैं जैसे कि भगवान कहते हैं, विधि को बदलकर देखो, सिद्धि मिलेगी, प्यार मिलेगा, चैन मिलेगा। ज्ञान के साथ शक्ति भी चाहिए, अनुभूति भी चाहिए। एक होता है आत्मा को जानना, एक होता है आत्मा हो जाना। मानना है भक्ति, स्वरूप हो जाना है अध्यात्म। सत्य में सुख है, असत्य में दु:ख। हम असत्य में जी रहे हैं इसलिए बार-बार खुशी खो जाती है। प्रकृति और पुरुष (आत्मा) दोनों बहुत महान हैं। दोनों के सहयोग से श्रेष्ठ जीवन बनता है परन्तु जब पुरुष, प्रकृति में आसक्त हो जाता है तो जीवन दलदल हो जाता है। घर-परिवार, समाज में रहते हुए व्यक्ति अनासक्त रहे, इसके लिए चाहिए ज्ञान सूर्य शिव बाबा की योगाग्नि।

ब्रह्माकुमार तुलसी भाई जी के दीदी मनमोहिनी जी के बारे में लेख से दीदी के बारे में जानकारी मिली और बहुत सीखने को भी मिला। ब्रह्माकुमारी गीता बहन का लेख 'वाह-वाही की वासना' एक महत्वपूर्ण लेख है। 'गुनाहों की स्वीकारोक्ति' से सीख मिली कि हम अधिकाधिक याद में रह अपने विकारों को समूल समाप्त कर दें। उपर्युक्त के अतिरिक्त पत्रिका में सभी कुछ बाबामय और उनकी शक्ति से सम्पन्न तो है। पत्रिका 54वें वर्ष में प्रवेश कर गई है, बधाई स्वीकारें। यह आत्मा की पत्रिका है, जिसका प्रत्येक वाक्य आत्मा को अपरिहार्य रूप से छूता ही है।

– डॉ.सम्राट सुधा, रुड़की (उत्तराखण्ड)

अगस्त, 2018 अंक में ''क्या गुस्सा सहज और स्वाभाविक है?'' लेख बहुत ही अच्छा लिखा गया है। गुस्सा हमेशा ही नुकसानदायक है। लेखिका ने गुस्से के कारणों का उल्लेख तो किया ही है, साथ में समाधान भी अच्छे दिए हैं। इसके लिए वे बधाई की पात्र हैं। हम सब प्रेमपूर्वक रहेंगे तो समाज और देश दोनों का भला होगा।

-- ब्रह्माकुमार रमेश मुंजाल, कालका (हरियाणा)

अगस्त, 2018 की ज्ञानामृत का हर लेख दिल को भा गया। काफी देर सोचता रहा कि विशेष किस लेख की महिमा करूँ! सभी लेख बहुत ही सुंदर और आत्मा के पुरुषार्थ की गति बढ़ाने के निमित्त हैं। कई लेख छोटे हैं परन्तु अर्थ विशेष भरा होता है। हर लेख अमूल्य है। अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं।

-- ब्रह्माकुमार अशोक, ससाणे नगर, हडपसर (पुणे)

अगस्त, 2018 अंक की विशेषताएँ –

- पूर्व मुख्य संचालिका दादी प्रकाशमणि जी के व्यक्तित्व पर लेख से हम सभी को आलोकित करना।
- क्रोध से बचाव के उपाय।
- इन्द्रियों की गुलामी के दुष्परिणामों से परिचय कराना।
- महिला-सशक्तिकरण हेतु आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग की महती आवश्यकता।
- सच्चे मित्रों के गुणों को आत्मसात करने की आवश्यकता।
- रक्षा-बन्धन जैसे महान पावन पर्व पर सराहनीय संपादन।

उपरोक्त विशेषताओं से परिपूर्ण यह अंक वास्तव में अनुकरणीय एवम् प्रशंसनीय है जिससे हम सभी की आत्माएँ आलोकित होकर, अन्य को भी आलोकित होने की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

-- डॉ. रामस्वरूप गुप्त, पूर्व प्रधानाचार्य,
भारतीय इण्टर कॉलेज, मैगलगंज (लखीमपुर-खीरी)

आवश्यकता

ग्लोबल अस्पताल मा.आबू में ट्रान्सपोर्ट विभाग में सेवा के लिए एक भाई की आवश्यकता है जिसे ट्रान्सपोर्ट वाहनों की तकनीकी जानकारी, रख रखाव व यातायात कार्य प्रणाली का अच्छा अनुभव हो। सुरक्षा सेवाओं के जे.सी.ओ. रैंक के मोटर ट्रान्सपोर्ट कोर्स किये हुए, अनुभवी बी.के. भाई को प्राथमिकता दी जायेगी।

संपर्क करें - 9413375360, ई-मेल - ghrchps@gmail.com

वैश्विक शिखर सम्मेलन

विज्ञान, अध्यात्म और पर्यावरण

सुखमय संसार के नवनिर्माण में मानव की भूमिका

आबू रोड (राज.) : वैश्विक सम्मेलन-कम-एक्सपो में ''विज्ञान, अध्यात्म और पर्यावरण'' विषय पर आबू रोड में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा, माननीय मुख्य न्यायाधीश, श्री राजनाथ सिंह, माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री भारत सरकार, राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारीज़ एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों और 140 देशों से पधारे 10,000 से अधिक प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। इस अवसर भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी तथा भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा शिखर सम्मेलन की सफलता के लिए अपना संदेश भेजा गया।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान और दिल्ली के आर्ट परिधि ग्रुप द्वारा पेंटिंग कम्पीटिशन कम वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस कम्पीटिशन में देशभर से आये कलाकारों ने भाग लिया। बाली इंडोनेशिया से पधारे कलाकारों ने भरत नाट्यम पर जोरदार प्रस्तुति देकर सभी का मन मोह लिया। देशभर से पधारे पर्यावरणविदों व सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया।

संकुचित हृदय के साथ व्यक्ति कभी महान कार्य नहीं कर सकता। -- गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह

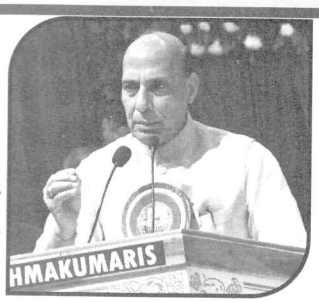

माननीय राजनाथ सिंह जी ने अपने सम्बोधन में मन, अध्यात्म, विज्ञान और भारतीय संस्कृति के विषय पर कहा कि मन का दायरा सीधे तौर पर खुशी के स्तर और आनंद के स्तरके साथ आनुपातिक है। संकुचित हृदय के साथ व्यक्ति कभी महान कार्य नहीं कर सकता। विशाल हृदय के साथ जीवन जीने में आनंद आता है। मात्र प्रार्थनाएं करने से व्यक्ति आध्यात्मिक नहीं बन सकता है। अपने जीवन में आध्यात्मिक स्तर को बढ़ाने के वह निरंतर प्रयास के साथ विशेष कार्य करता रहता है। मंदिरों या मस्जिदों में प्रार्थनाएं अदा करने के साथ-साथ अपने हृदय को भी विशाल करने की जरूरत है। जिसका हृदय जितना विशाल होगा वह उतना अधिक आध्यात्मिक होगा। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सदा हृदय को विशाल कैसे करें, यह ज्ञान सभी को प्रदान किया जाता है। मुख्य प्रशासिका दादी जानकी और दादी रतन मोहिनी जी उसी विशाल हृदय के प्रतीक हैं तभी वे इतने बड़े परिवार की देखभाल बड़ी सुगमता के साथ कर रहीं हैं। इन्होंने इतनी सारी बहनों के सहयोग के साथ विश्व के 146 देशों में इस संगठन का विस्तार किया है। जो कार्य कोई सरकार करने में असमर्थ है, ब्रह्माकुमारीज़ उसे कर रहे हैं।

गृह मंत्री ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने भी छोटी-छोटी बातों पर चिंता व्यक्त की है। संगठन साफ-सफाई, जैविक खेती, सौर ऊर्जा, महिला सशक्तिकरण पर काम कर रहा है। संगठन न केवल मनुष्यों के बारे में लेकिन मानवता और जीवित प्राणियों के लिए भी जागृति का कार्य कर रहा है। 80वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर संगठन ने 80 लाख पेड़ लगाए, जो वर्तमान में पर्यावरण को बचाने के लिए देश और विश्व को संदेश है।

गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि हमारे देश के संतों ने शून्य और आध्यात्मिकता की खोज की थी। विज्ञान, अध्यात्म और धर्म एक-दूसरे के विपरीत हैं, यह पश्चिमी देशों का विश्वास है। पर भारत का मानना है कि विज्ञान और अध्यात्म एक-दूसरे के पूरक हैं और ये एक ही हैं। चरक, जीवक, सुश्रुत, आर्यभट्ट आदि महान संतों के साथ ही महान वैज्ञानिक भी थे।

विज्ञान, आध्यात्मिकता की सहायता से ही बढ़ सकता है।

--न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा

''मैं यहाँ शांति की भावना महसूस करता हूँ। हम सार्वभौमिक शांति चाहते हैं और आप में से हरेक शांति का महान राजदूत है। विज्ञान जानकारी देता है कि ब्रह्मांड में क्या हो रहा है। अगर हम एक साफ, स्पष्ट, प्रदूषण रहित ब्रह्मांड चाहते हैं तो व्यवहारिक नैतिकता सबसे ज्यादा मायने रखती है। यदि दुनिया में हर कोई विश्वास के साथ व्यवहारिक नैतिकता का आचरण करता है तो वहीं से पर्यावरण में नैतिकता का प्रसार होगा। 80 लाख पौधे संगठन द्वारा लगाए गए। अगर आप नैतिकता के बीज बोने का कार्य कर रहे हैं तो यही आध्यात्मिक-नैतिक शिक्षा है। एक बार हमने स्वयं शांति को पा लिया तो दुनिया में शांति होगी। हम दुनिया में शांति चाहते हैं, दुनिया में अच्छा माहौल चाहते हैं। वैज्ञानिक तथ्ययुक्त आध्यात्मिकता द्वारा जो विश्व शांति की ओर बढ़ रहा है, यह सराहनीय है। ब्रह्माकुमारीज़ का दुनिया को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास अद्‌भुत है। हम सब इस दुनिया और ब्रह्मांड से संबंध रखते हैं, इसलिए हम निर्माण के लिए भागीदारी दें, न कि विनाश के लिए। आप एक शांतिपूर्ण विश्व बनाने में रचनात्मक योगदान दे रहे हैं।''

''इच्छा जरूरत बन जाती है और जरूरत आवश्यकता हो जाती है। मान लो किसी की सोच में है कि वह पीएच.डी. होना चाहता है। जब यह कहा जाता है, ''मैं यह चाहता हूँ'' यह कहने के साथ ही कि मैं यह चाहता हूँ, मन की शांति चली गई और आध्यात्मिकता की भावना को भी मैंने खो दिया। विज्ञान मन की चेतना, आत्मा और दिल के प्रति पूरी तरह से प्रासंगिक है। विज्ञान और अध्यात्म एक दार्शनिक दृष्टिकोण के साथ यात्रा करते हैं। जब व्यक्ति स्वयं को बदल कर, परमेश्वर के साथ अपने सच्चे आत्म स्वरूप में स्थित करता है तब वह चमत्कार कर सकता है। विज्ञान, आध्यात्मिकता की सहायता से बढ़ सकता है। भगवान या सर्वशक्तिमान हम सभी से प्यार करता है, हमारी देख-भाल करता है। भगवान कभी किसी को डराता नहीं है। आप अपना अहंकार परमात्मा को समर्पित करने के बाद ही भगवान से जुड़ सकते हैं। इस संगठन की पवित्रता हर किसी को अध्यात्म में आगे बढ़ने में मदद कर रही है।''

मांसाहारी खुराक भी पर्यावरण को नुकसान पहुंचाती है।

-- मारला मैपल्स

अमेरिका से पधारी मारला मैपल्स, टेलीविजन व्यक्तित्व और अभिनेत्री ने कहा कि अमेरिका को इन दिनों कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन चारों तरफ से विशेष लोग और दोस्त हमारे जीवन को खुशी से भर देते हैं। यह संभव हुआ है जब से हमने कुंडलिनी योग, ब्रह्माकुमारीज़ का राजयोग और दिनचर्या में शाकाहारी भोजन इत्यादि को शामिल किया है। वैश्विक सम्मेलन को संबोधित करते हुए मारला ने कहा कि हम सब प्रगति कर सकते हैं, आगे बढ़ सकते हैं, हम सब एक साथ रहें। मुझे यहां आने का अवसर देने के लिए परमात्मा का बहुत-बहुत धन्यवाद। मारला ने कहा कि वह कई प्रकार के भोजन को ग्रहण कर चुकी हैं लेकिन शाकाहारी भोजन सबसे अच्छा है। माँसाहारी खुराक भी पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती है।

ज्ञानामृत

पद्मश्री कार्तिकेय साराभाई, संस्थापक और निदेशक पर्यावरण शिक्षा केंद्र ने कहा कि हमें अपनी पुरानी परंपराओं के साथ नई प्रौद्योगिकियों का एक साथ क्रम में, पर्यावरण को बचाने के लिए अनुसरण करने की आवश्यकता है। मनुष्य को लगता है कि प्रकृति बेकार चीजें समा सकती है। यह विचारधारा सही नहीं है। महात्मा गांधी ने कहा कि हमें एक ट्रस्टी के रूप में प्रकृति का उपयोग करने की जरूरत है। ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक ब्रह्मा बाबा को याद करते हुए उन्होंने कहा कि कई दशक पहले, ब्रह्मा बाबा ने अपने दैवी साक्षात्कार में देखा था कि कैसे परमाणु बमों द्वारा प्रकृति का नाश और मानव संघर्ष की वजह से तबाही हो रही है। हम अब वह सब व्यवहारिक रूप से देख रहे हैं। इसलिए पर्यावरण को बचाने के लिए हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जितने की आवश्यकता है।

राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी, ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका ने कहा कि हम सब भगवान के बच्चे हैं और इस तरह हम आपस में भाई-भाई हैं। इसलिए हमें एक-दूसरे के साथ सहयोग करना चाहिए और एक दूसरे को खुश रखना चाहिए। हमें एक-दूसरे से बदला लेने की या ईर्ष्या की भावना नहीं रखनी चाहिए। भारत में जब स्वर्ग था तो चारों ओर खुशी, शांति और आनंद था। वहां अधर्म का कोई निशान नहीं था। हम फिर से अपने दिव्य कर्मों के द्वारा गोल्डन दुनिया बना सकते हैं।

श्री थावर चंद गहलोत, माननीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री ने कहा कि संगठन विश्व शांति के संकल्प को धरातल पर उतारने का, वसुधैव कुटुम्बकम्, जियो और जीने दो और आम जनता को धर्म पथ पर प्रेरित करने का प्रयास कर रही है। वर्तमान दुनिया में चिंता और समस्याओं में वृद्धि का कारण आध्यात्मिकता से हमारी दूरी है। आध्यात्मिकता अपनाने के बिना, वैश्विक शांति की भावना और सर्वे संतु निरामया: की धारणा को फलीभूत नहीं किया जा सकता है।

डॉ सिन्धुताई सपकाल, अनाथों की माता, पुणे (जो बंगलौर में 1,050 बच्चों की देख-भाल करने में सेवारत हैं) ने कहा कि हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए हमेशा सीखने की जरूरत है। हमें अपने दिल की सुनने की जरूरत है। कहा जाता है, कफन में जेब नहीं होती है, कोई भी कभी भी मौत की सिफारिश नहीं करता है। हमें त्याग करने की भावना को जानने की जरूरत है।

रीता बहुगुणा जोशी, उ.प्र. की महिला, परिवार व बाल कल्याण एवं टूरिज्म मंत्री ने कहा कि लीडर वही होता है जो अपनी विधा में कीर्तिमान स्थापित करे। ब्रह्मा बाबा ने ऐसे समय में बेटियों को आगे बढ़ाया जब भारत की लड़कियों को शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति नहीं थी। ब्रह्मा बाबा द्वारा लगाया गया एक छोटा-सा पौधा आज वटवृक्ष का रूप ले चुका है।

हमने दुनिया को अनेक धर्म और फिलॉसफी दी हैं। ब्रह्माकुमारी बहनें एकता का सिद्धांत विश्वभर में दे रही हैं। बहनों द्वारा जो शांति, पवित्रता, भाईचारा, प्रेम का संदेश दिया जा रहा है यदि इनमें से एक बात ही हम ग्रहण कर लें तो जीवन सुधर जाएगा। ब्रह्माकुमारी बहनें विश्वभर में शांति का संदेश फैला रही हैं। यहां से जुड़े लोगों को ईश्वर ने दूत बनाकर भेजा है। यहां हर धर्म, जाति और संप्रदाय के लोग हैं, ये हमारे देश की महानता और आध्यात्म का ही कमाल है। अपनी चेतना और वजूद को समझना ही अध्यात्म है। अध्यात्म का अर्थ वैराग्य लेना नहीं है। आध्यात्मिक शक्ति का ही कमाल है जो स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में अपने उद्बोधन से विश्वभर में आध्यात्मिक संदेश दिया था।

गंदे नालों और सीवरेज का पानी गंगा में छोड़ने से हालत ये हो गई है कि आज इसमें स्नान करना मुश्किल है। जिस दिन हम मान लेंगे कि जल ही जीवन है तो प्रदूषण नहीं करेंगे। प्रदूषण रोकने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे। प्रधानमंत्री संदेश दे रहे हैं कि स्वच्छता ही सेवा है, जिस दिन हम इसे धारण कर लेंगे तो गंदगी नहीं रहेगी।

सुधीर मुंगातीवर, महाराष्ट्र के वित्त, निर्माण और वन मंत्री ने कहा कि आज इस देश की लीडरशिप में इस सोच को भरना होगा कि हम गलत कामों से, गलत कृति से, गलत विचारों से देश को आगे नहीं चलाएंगे। हमारा देश उस नेतृत्व में चलेगा कि विज्ञान कितना भी आगे बढ़े, रामराज्य की सोच कायम रहेगी। देश आर्थिक दृष्टि से कितना भी संपन्न रहे लेकिन हमारा देश श्रीकृष्ण, श्रीराम, बुद्ध, महावीर का है अत: इस देश का अध्यात्म नहीं बदलेगा। अध्यात्म हमें सिखाता है कि ज्योत से ज्योत जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।

रोजाना एक व्यक्ति 21,999 बार सांस लेता है। यदि मार्केट रेट के हिसाब से लगाएं तो 2100 रुपए की ऑक्सीजन पेड़ हमें रोज देते हैं। इस हिसाब से 80 वर्ष में एक पेड़ से हमें 6,13,20000 रुपए की प्राणवायु मिलती है। हमने कहा, वन से धन तक और जंगल से मंगल तक जाना है। इसे लेकर ही हमने 'पेड़ लगाओ' अभियान शुरू किया है। इसमें लक्ष्य से ज्यादा पौधरोपण किया। वृक्ष बचाने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। पर्यावरण बचाना हम सभी की जिम्मेदारी है। आज संयुक्त राष्ट्र संघ भी जीडीपी की जगह प्रति व्यक्ति की खुशी पर बात करता है।

रोलांडा वाट, यू.एस.ए. से पधारीं सीनियर जर्नलिस्ट व टीवी एंकर ने कहा कि मैं कर्मों की पारदर्शिता पर विश्वास करती हूं। हम सभी में प्रेम और शांति होना चाहिए। ईश्वर के बिना जीवन अंधकारमय हो जाता है। यहां एक साथ सात हजार लोग देखकर अभिभूत हूं। विदेश में तो एक साथ 300 लोग भी इकट्ठे नहीं होते हैं। क्योंकि यहां गॉड से लव करने की शिक्षा दी जा रही है। साथ ही वन गॉड, वन फैमिली का संदेश दिया जा रहा है। मैं यहां ईश्वरीय शक्ति का अनुभव कर रही हूं।

पद्मश्री प्रो. रामाकृष्णा वी होसुर, मुंबई से पधारे टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च के डिप्टी डायरेक्टर ने कहा कि ईमानदारी, सत्यता, दृढ़ता, नम्रता वैज्ञानिक पद्धति से विकसित नहीं होंगी, इनके लिए अध्यात्म जरूरी है। अंत: चेतना में झांकने से ही परमात्मा की अनुभूति होगी। भगवत गीता के ज्ञान को आत्मसात करने की जरूरत है। परमात्मा से रिश्ता जोड़ने के लिए गीता ज्ञान के अनुसार स्वयं का जीवन मर्यादा पुरुषोत्तम बनाना होगा। आध्यात्मिकता से ही सुख-शांति, पवित्रता, नि:स्वार्थ प्यार और एकता आ सकती है।

एम. कृष्णा रेड्डी, कर्नाटक के विधानसभा उपाध्यक्ष ने कहा कि इस संस्था की पहचान शांति और पवित्रता से है। 103 वर्षीय दादी जानकी हमारे सामने आदर्श हैं। समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। सामाजिक, प्राकृतिक, भौतिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय यहां सुचारू रूप से देखने को मिलता है। यहां से विश्व में, अध्यात्म और मूल्यों से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है।

अनीता देवकोटा, नेपाल से पधारीं विधायक ने कहा कि यहां से वसुधैव कुटुम्बकम् और सकारात्मक सोच का संदेश दिया जा रहा है। भौतिक विज्ञान से जीवन सार्थक नहीं होगा। इसके लिए अध्यात्म-विज्ञान को अपनाना होगा।

सुषमा सेठ, बॉलीवुड व टीवी एक्ट्रेस ने कहा कि यहां आकर सभी का व्यवहार देखकर आनंद आया। संस्था ने विश्वभर में बदलाव लाया है। आज विश्वभर के लोग हमारा अध्यात्म और योग सीख रहे हैं।

प्रवीण कुमार मेहता, डिफेंस मंत्रालय डीआरडीओ के महानिदेशक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा कि यहां आकर पॉजीटिव और स्प्रीचुअलिटी के बाइब्रेशन महसूस किए। साथ ही जाना कि कैसे हम आत्मा को आत्मा से जोड़ सकते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था फील्ड में कार्य कर रही है। मुझे पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के साथ कार्य करने का मौका मिला। उनमें साइंस और स्प्रीचुअलिटी का समन्वय था। ये संस्थान आत्मा के उत्थान और स्वर्णिम दुनिया लाने का कार्य कर रहा है।

वीरेंद्र कंवर, हिमाचल प्रदेश के ग्राम विकास व पंचायती राज मंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज जीवन जीने की कला सिखा रही है। भारत की संस्कृति व मूल्यों को फिर से विश्वभर में फैला रही है। पश्चिम की सोच और हमारी सोच में भारी अंतर है। पश्चिम के लोग विश्व को व्यापार की दृष्टि से देखते हैं। हमारी संस्कृति सिखाती है कि विश्व एक परिवार है। विज्ञान को अध्यात्म से जोड़कर इसके दुष्परिणाम कम कर सकते हैं। संस्था द्वारा राष्ट्र के जीवन मूल्य को फिर से दुनिया भर में पहुंचाया जा रहा है। आज इस मंच से मैं प्रण लेकर जा रहा हूं कि संस्था द्वारा किए जा रहे समाज परिवर्तन के कार्य से जुड़ा रहूंगा।

जल योद्धा अय्यपा मसाजी, बैंगलूरू जल साक्षरता नींव के संस्थापक ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन पर्यावरण व जल संरक्षण को लेकर संवेदनशील है। घटता भू-गर्भीय जलस्तर चिंता का विषय है। जल संरक्षण को लेकर व्यापक स्तर पर जन-जागरुकता की जरूरत है।

पद्मश्री डॉ. प्रकाश आम्टे, जाने-माने पर्यावरणविद्, समाजसेवी ने कहा कि प्रेम-स्नेह में इतनी शक्ति है कि खूंखार जंगली जानवरों को अपना दोस्त बना सकते हैं। जिन जानवरों को हम खतरनाक कहते हैं वो मेरे घर के

सदस्य हैं। कॉलेज में एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई के दौरान मन में आया कि हमें समाज के सबसे पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए कुछ करना है। पढ़ाई के बाद संकल्प लिया और आदिवासियों की सेवा के लिए निकल पड़े। इसमें हमारी धर्मपत्नी मंदाकिनी आम्टे ने पूरा साथ दिया। सुविधा संपन्न जीवनशैली छोड़कर तमाम परेशानियों का सामना करते हुए हम पति-पत्नी लोगों की सेवा में जुटे रहे। मन में एक ही संकल्प था कि हमारे इन भाई-बहनों को भी समाज की मुख्य धारा से जोडऩा है। लोगों से ऐसे जुड़े कि कब इनके बीच 45 साल गुजर गए पता ही नहीं चला।

पद्मश्री डॉ. आम्टे ने कहा कि आदिवासियों की सेवा में मेरे बेटे-बहू भी पूरा साथ दे रहे हैं। मुझे गर्व होता है कि हमारे परिवार की चौथी पीढ़ी लोगों की सेवा में पूरी तन्मयता के साथ लगी है (डॉ. आम्टे ने आनंदवन की स्थापना की है जहां जंगली जानवरों, पशु-पक्षियों को पाला-पोसा जाता है। साथ ही कुष्ठ रोगियों के लिए वर्षों से काम कर रहे हैं। सामाजिक कार्यों के लिए आपको वर्ष 2002 में पद्मश्री अवार्ड और 2014 में मदर टेरेसा अवार्ड से सम्मानित किया गया। आपके जीवन पर फिल्म भी बनाई गई है)

नई दिल्ली से पधारे **श्री 108 महामंडलेश्वर स्वामी हरिओम गिरी महाराज** ने कहा कि ब्रह्मा बाबा ने ब्रह्माकुमारी बहनों को तैयार कर विश्व शांति के पावन कार्य में लगाया। बाबा ने ध्यान, योग और ओम शांति के महामंत्र से जो ये पावन धाम बनाया है इसे देखकर मन को बहुत प्रसन्नता हुई। यहां से पूरे विश्व में शांति की किरणें फैल रही हैं। ये ब्रह्माकुमारी बहनें पूरे संसार को शांति प्रदान कर सकती हैं। यहां से जो ऊर्जा उत्पन्न होगी वह पूरे विश्व में शांति फैलाएगी।

इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च काउंसिल के सीनियर मेंबर **सुदेश चंदेल** ने कहा कि पूरी दुनिया के लोग अध्यात्म और योग को समझने के लिए भारत की ओर रुख करते हैं। ये हमारे भारत की महानता ही है। अध्यात्म हमारी विरासत है। पाश्चात्य दार्शनिकों ने भी अध्यात्म को समझने के लिए भारत की ओर रुख किया। आज ब्रह्माकुमारी बहनें न केवल भारत बल्कि विश्व के 140 देशों में, भारतीय पुरातन संस्कृति व आध्यात्मिकता का संदेश पूरी निष्ठा के साथ दे रही हैं। ये बहनें भारत की वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को पूरे विश्व में साकार करने के महान कार्य में लगी हैं। संस्था ने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में जबरदस्त क्रांति लाई है।

नाइजीरिया से पधारीं **सिस्टर आरा रोला** ने कहा कि मैं परमात्मा के बुलावे पर ही यहां आई हूं। आत्मा को कोई देश नहीं होता, न ही वह किसी सीमा में बंधती है। मुझे यहां आकर ऐसा लगा जैसे मैं अपने ही घर में आ गई। पहली बार भारत आईं सिस्टर आरा ने हिंदी में गीत गाकर सभी को भाव-विभोर कर दिया।

अरुपुकोत्ताई की श्रीरामलिंगा स्पिनर्स प्रा.लि. की एम.डी. **कोठाई धीनाकरन** ने कहा कि मैं अपने विश्वास और अनुभव से कह सकती हूं कि यदि आपको परमात्मा पर संपूर्ण निश्चय और विश्वास है तो उनकी मदद हर पल महसूस होती है। जब हम परमात्मा को सच्चे दिल से याद करते हैं तो वह हमारे सामने रक्षक बनकर खड़े हो जाते हैं। ईश्वर तो बस भाव का भूखा है, वह हमारे भाव को पढ़ लेता है। जीवन में सदा सच्चाई और सफाई रखें।

नेपाल से पधारे विधायक **भोजाप्रसाद श्रेष्ठ** ने कहा कि महात्मा बुद्ध का जो शांति स्थापना का कार्य अधूरा रह गया था, उसे ये ब्रह्माकुमारी बहनें पूरा कर रही हैं। यहां से विश्व शांति का कार्य और प्रकाश की किरणें पूरे विश्व में फैल रही हैं। कम बोलो, मीठा बोलो, धीरे बोलो -- ये महावाक्य यहां के प्रत्येक भाई-बहन के जीवन में देखने को मिला।

सेंट पीटर्सबर्ग, रसिया की निदेशिका **बीके संतोष दीदी** ने कहा कि अपने अंतर्मन में ये शब्द बसा लें कि 'मैं एक महान आत्मा हूं, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मेरा जन्म महान कार्यों के लिए हुआ है, मुझ पर सदा परमात्मा की छत्रछाया है, ईश्वर सदा मेरे साथ हैं' तो जीवन वैसा ही महान और दिव्य बन जाएगा। साथ ही राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से आपने सभी को शांति की गहन अनुभूति कराई।

सम्मेलन के बाद एक्शन प्लान प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम संयोजक व संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने कहा कि सभी यहां से एक मंत्र लेकर जाएं कि आज से अपने मन को युद्धस्थल नहीं योग स्थल बनाएंगे। योग को जीवन का हिस्सा बनाकर खुद का और औरों का परिवर्तन करेंगे। हम बदलेंगे, जग बदलेगा। ■■■

परमात्मा का अद्भुत चमत्कार

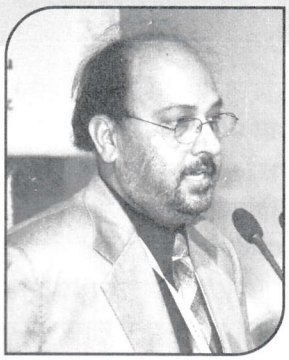

■■■ डा0 प्रोफेसर रोमेश गौतम, वरिष्ठ अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली
एवं ग्लोबल चेयरमैन लीगल सेल, अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन

मुझे ज्ञान सरोवर में आयोजित स्पार्क विंग के राष्ट्रीय सम्मेलन के स्वागत सत्र एवं उद्घाटन सत्र में सम्मानित अतिथि के रूप में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। परमात्मा की कृपा से मैं 7 राज्यों का महाधिवक्ता रहा। मुझे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से 50 अवार्ड मिले हैं। मैं माउन्ट आबू ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय में पहली बार आया। यहाँ आकर मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं एक असामान्य और अलौकिक स्थान पर पहुँचा हूँ। यहाँ आकर मैं अपने ऑफिस तक को भूल गया। इस स्थान की मेरे मन पर एक अलग-सी अलौकिक और अमिट छाप पड़ी। मुझे यहाँ जो आत्मिक शांति मिली उसकी तुलना धन-दौलत से नहीं की जा सकती है। मुझे यहाँ बहुत कुछ सीखने को मिला।

एक ब्रह्माकुमार भाई मेरे सम्पर्क में आये थे, उन्होंने मुझे स्पार्क विंग काफ्रेन्स में आने के लिए फोन किया। शुरू-शुरू में मुझे लगा कि मैं माउण्ट आबू क्यों जाऊँगा? मैं इनको जानता नहीं हूँ, इन्होंने मुझे फोन किया, मैंने गलती से अनजान व्यक्ति का फोन रिसीव कर लिया लेकिन वही अनजान व्यक्ति लगभग एक या सवा महीने के अन्तराल में मेरे परिवार का सदस्य बन गया। यह परमात्मा का अद्भुत चमत्कार नहीं तो और क्या है? परमात्मा पिता ने मुझे यह सही दिशा दिखाई, सही रास्ता दिखाया और इस रास्ते पर मैं ऑटोमेटिकली चलता गया। मेरे कुछ केसेज सुप्रीम कोर्ट में लगे हुए थे, उनके बारे में भी मैंने कुछ नहीं सोचा। मुझे उनकी कोई फिकर नहीं है, उनकी फिकर खुद परमात्मा को है। मेरा जो काम सुप्रीम कोर्ट में पेंडिंग है, वह परमात्मा खुद कर लेंगे। मैंने यही सोचा, मेरे बच्चे लॉयर हैं, वे संभाल लेंगे। मैंने उन्हें अचानक कहा कि मैं तो माउण्ट आबू ब्रह्माकुमारी आश्रम में जा रहा हूँ, वहाँ से 4 से 5 दिन के बाद ही आऊँगा।

जब मैं यहाँ आया तो मैंने देखा कि मेरे से काफी वरिष्ठ, काफी उम्रदराज बहनें, बिना किसी सहारे के चल रही हैं। उन्हें देखकर मुझे लगा कि ये उम्र के जिस पड़ाव पर हैं, इस पड़ाव में भी इतना हौसला परमात्मा ने पैदा किया है कि उन्हें किसी के सहारे की जरूरत नहीं है। यह परमात्मा का घर है। परमात्मा ने यहाँ हरेक को इतनी हिम्मत दी है कि यदि किसी को घुटनों में तकलीफ है तो भी वो अपने काम के लिए, अपने आप जरूर उपस्थित रहा है। जिस तरीके से यहाँ बहनों को सम्मान मिलता है, जिस तरह की दिव्यता का जीवन वे जी रही हैं, उस प्रकार के दिव्य जीवन के लिए संविधान में अब तक, हम जैसे वकीलों की काफी कोशिशों के बाद भी सुधार नहीं हुआ है। 'हरेक मनुष्य को दिव्यता के साथ जीने का हक' मुझे निश्चय है, हम इसे जरूर प्राप्त कर लेंगे। यहाँ परमात्मा की असीम कृपा से सबको दिव्यता से जीवन जीने का हक मिल रहा है। जिसे भी देखते हैं उसके चेहरे पर दिव्य मुस्कान है, खुशी है। जिससे भी मिलता हूँ, वो ऐसा मिलन है कि जैसे पिछले जन्मों से उससे हमारे रिश्ते हैं। हम लोगों के रिश्ते खून के रिश्तों से भी ज्यादा महत्वपूर्ण आत्मिक या रूहानियत के हैं। हम सभी एक परमात्मा के बच्चे हैं। हम सबके परमपिता परमात्मा जो सच्चे माँ-बाप हैं, वो एक हैं। इस वजह से हम लोग आपस में जुड़ते जा रहे हैं।

यह ब्रह्माकुमारी संगठन बहनों की उन्नति के लिए, समाज से बुराइयाँ हटाने के लिए, हमारे अच्छे और स्वस्थ जीवन के लिए राजयोग सिखा रहा है। मैंने भी 3 दिन राजयोग के सत्र अटेण्ड किये। मैंने अनुभव किया कि राजयोग के सत्र में 10 घण्टे की नींद, आधे घण्टे में पूरी हो सकती है। शरीर में कोई थकावट नहीं रहती है। मैंने रात को 10:30 बजे तक कार्य किया। प्रात: 4 बजे उठ गया लेकिन मुझे थकावट नहीं हुई क्योंकि मैंने बीच-बीच में राजयोग के सत्र अटैण्ड किये थे।

ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से सिखाए जा रहे राजयोग में भारतीय प्राचीन संस्कृति झलकती है।

आध्यात्मिक सम्पदा से ही मनुष्य को मन की शांति मिलती है। ब्रह्माकुमारी संगठन की पूरे विश्व में शाखायें हैं। इतने बड़े संगठन में, इतना अच्छा प्रबन्धन है कि कहीं भी मिट्टी नजर नहीं आ रही है, यह भी बड़ी काबिले तारीफ बात है। विदेश में भी ऐसा देखने को नहीं मिलता है। मैं अनेक देश घूमा हूँ, मैंने अपने लीगल कामों के लिए पूरे विश्व के कई चक्कर लगाये हैं लेकिन ऐसी स्वच्छता, इतना अच्छा महौल, इतने अच्छे लोग अभी तक नहीं मिले। आप विश्व के किसी भी कोने में चले जायें, इतने अच्छे लोग कहीं नहीं मिलेंगे। हम उनको एक बार ओमशान्ति बोलते हैं तो वो हमें मुसकराहट के साथ दो बार ओमशान्ति बोलते हुए ऐसा सम्मान देते हैं जैसे कि हमें बहुत पहले से जानते हों। ब्रह्माकुमारी संगठन के लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। अब मेरे नये जीवन की शुरूआत हुई है। परमात्मा ने मुझे सही दिशा दिखाई है। अब मैं यहाँ बहुत जल्दी-जल्दी आता रहूँगा। ■■■

ज्ञानयुक्त – व्यर्थमुक्त

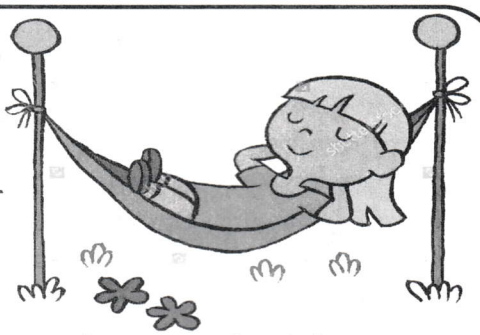

■■■ ब्रह्माकुमार सुधीर, चंडीगढ

आज के व्यक्ति के जीवन में अनेक समस्याएँ हैं जिनसे मन में व्यर्थ विचार चलते रहते हैं और परेशानी बनी रहती है। इससे छूटने का क्या उपाय है?

अन्तर्मुखी बन ज्ञान का सिमरण करो

जब भी व्यर्थ विचार चलने लगें तो अटेन्शन देकर दृढ़ता से विचार को परिवर्तन करें। यदि कोई समर्थ विचार नहीं कर सकते तो कुछ अच्छा साहित्य, वीडियो आदि को पढ़ें अथवा देखें। हाँ, कभी-कभी परिस्थिति-वश संग ही ऐसा प्राप्त होता है जहाँ व्यर्थ बातों का वातावरण बना ही रहता है।

उदाहरणत: कार्य-स्थल पर, घर में, शादी आदि में परन्तु फिर भी इन सब हालात में अपनी हर्षितमुख स्थिति बनाये रखने के लिए श्रेष्ठ विचारों का प्रवाह मन में होना ज़रूरी है। प्रथम उपाय तो अन्तर्मुखता है क्योंकि चुप रहने से व्यर्थ बोल नहीं निकलते और समर्थ विचार करने का समय मिल जाता है। फिर यदि बोलना भी पड़े तो कोई ज्ञानयुक्त खुशी की बात बोलकर सबको खुश कर दें। परन्तु वह तब होगा जब स्वयं का ज्ञान का खाता भरपूर होगा। इसके लिए जब भी समय मिले ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण या अध्ययन बार-बार करते रहें। गाँधी जी कहते थे – जब कोई समस्या आती है तो गीता पढ़ना शुरू कर देता हूँ और समाधान मिल जाता है।

अब देखिये, जिन महान आत्माओं को स्वयं गीता-ज्ञानदाता का श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त हो, उन्हें तो उसका अध्ययन दिन में जितना ज़्यादा बार हो सके, करते रहना चाहिए। कोई विपरीत परिस्थिति न भी आये तो भी दिन में 5 से 8 बार ईश्वरीय ज्ञान को पढ़कर मनन करना ही चाहिए और परिस्थिति आने पर तो और ही ज़्यादा करना चाहिए।

जो भी हुआ, वो अच्छा है

इस अविनाशी विश्व-नाटक के रंगमंच पर सभी मनुष्यात्माएँ अपना-अपना अभिनय कर रही हैं। अत: सबकुछ उचित हो रहा है। किसी खेल में कोई अच्छा खिलाड़ी भी होगा, कोई कमज़ोर भी होगा। ऐसे ही यह सृष्टि भी एक खेल है, फिर भी यदि कोई कार्य, व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि अच्छी न लगे तो श्रीमद्भगवद्गीता के ये महावाक्य भी स्मृति में लाने चाहिएँ कि जो हुआ अच्छा, जो हो रहा है और ही अच्छा और जो होगा, अच्छे-से-अच्छा ही होगा।

ऐसे ज्ञानयुक्त महावाक्यों का मनन-सिमरण करने से व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति मिल ही जायेगी। उदाहरणत: ज्ञानामृत के लेखों को दो-तीन बार पढ़ा जाये तो पढ़ते-पढ़ते ही कुछ समय के लिए व्यर्थ बातों से किनारा हो जाता है। फिर उनको धारण करने पर समर्थ एवं शक्तिशाली बन ही जायेंगे। ■■■

बाल दिवस पर विशेष ..

क, ख, ग, घ का अर्थ

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

प्यारे बच्चो, बाल दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ! आपने जब विद्यालय में दाखिला लिया तो हिन्दी वर्णमाला अवश्य सीखी होगी। इसकी शुरूआत 'क' से होती है। इसके बाद 'ख', 'ग', 'घ' आदि अक्षर क्रम से आते जाते हैं।

आपने अपनी कुशाग्र बुद्धि से बहुत जल्दी क, ख, ग, घ... आदि सब अक्षर लिखने-पढ़ने-बोलने सीख लिए परन्तु (1) लिखना, (2) पढ़ना, (3) बोलना – ये तो तीन पहलू ही हुए, एक चौथा पहलू भी है इनका। जैसे आप जिस कुर्सी पर बैठते हो या टेबल, बैंच, स्टूल आदि का प्रयोग करते हो इन सभी के चार पाँव (टाँगें) होते हैं। चार पाँव होने से इनका सन्तुलन बना रहता है और इन पर बैठने वाला व्यक्ति या इन पर रखी चीज हिलती-डुलती नहीं है, स्थिर रहती है। हमें भी जीवन की परिस्थितियों और हलचलों के बीच, रोग-शोक-कष्टों और भाव-स्वभाव-संस्कार की टकराहट के बीच यदि मानसिक स्थिरता चाहिए तो वर्णमाला के विभिन्न अक्षरों का एक चौथा पहलू भी सीखना पड़ेगा। वो पहलू कौन-सा है?

'क' अर्थात् कर्म

क्या हम सही तरीके से कर्म करना सीखे? क्या हम अपने कर्मों के मास्टर बने? क्या हम ऐसे कर्म करते हैं, जो हम कर्मबन्धनों से मुक्त रहें अर्थात् हमारे कर्म हमें बांधें ना।

बिना स्वीकृति सम्मति ना छूएँ

एक बार राजवैद्य महर्षि चरक औषधियों की खोज में शिष्यों के साथ वन में घूम रहे थे। उन्होंने एक खेत में नए और विलक्षण फूल को देखा। वे उसे निहारते रहे। एक शिष्य ने कहा, गुरुवर, मैं फूल तोड़ लाता हूँ, आप बैठकर अवलोकन कर लेना। महर्षि ने कहा, वत्स, खेत के मालिक की अनुमति के बिना फूल कैसे तोड़ा जा सकता है, यह तो चोरी होगी। शिष्य बोला, फूल जैसी छोटी चीज के लिए स्वीकृति की भला क्या आवश्यक्ता है और फिर आपको तो राजाज्ञा है कि औषधियों के निर्माण के लिए वनस्पतियों की खोज करें।

महर्षि चरक गम्भीर होकर बोले, राजाज्ञा होना अलग बात है लेकिन हमारा नैतिक दायित्व कहता है कि हम बिना मालिक की स्वीकृति के किसी की सम्पत्ति को हाथ भी ना लगाएं। इसके बाद मीलों चलकर महर्षि खेत के मालिक के पास पहुँचे और उनकी स्वीकृति से ही फूल तोड़ा गया।

श्रम का सम्मान

बात उस समय की है जब देश का विभाजन हुआ था और चारों ओर साम्प्रदायिकता की आग जल रही थी। पुलिस और सेना की मौजूदगी में शान्ति कायम नहीं हो रही थी। इन्हीं दिनों साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अनशन शुरू किया और एक सौ एक्कीस घंटे बिना आहार के रहे। जब उनका अनशन तुड़वाया गया तो वे काफी कमजोर हो गये थे। कमजोर होने पर भी, अनशन तोड़ने के तुरन्त बाद वे चरखा चलाकर सूत कातने लगे। डॉक्टरों ने इसके लिए मना किया तो वे धीमे स्वर में बोले, 'बिना मेहनत के प्राप्त की गई रोटी वास्तव में चोरी की होती है। अब मैंने भोजन करना शुरू कर दिया है तो मुझे श्रम भी करना चाहिए।'

प्यारे बच्चो, उपरोक्त दोनों घटनाएँ हमें कर्म में नैतिकता और जीवन में श्रम का महत्त्व बताती हैं। हम इन्हें अपने कर्मों में अवश्य उतारें।

'ख' अर्थात् खाना

क पहले है, इसका अर्थ है पहले कर्म करें, फिर खाएँ। खाने के भी नियम हैं।

क्या खाएँ – जो देवी-देवताओं के भी भोग्य पदार्थ हैं, ऐसे (सात्विक) खाद्य पदार्थ खाएँ। शरीर के स्वास्थ्य के अनुकूल खाएँ। बासी, गला हुआ, कंकर-मिट्टी युक्त न खाएँ। राजसिक, तामसिक न खाएँ, बहुत मिर्च-मसाले वाला न खाएँ।

कैसे खाएँ – भगवान की याद में खाएँ, मौन रहकर खाएँ, प्रकृति माँ का अहसान मानते हुए खाएँ। जो मिला, जितना मिला, सन्तोष के साथ खाएँ। खिलाने और बनाने के निमित्त व्यक्ति का धन्यवाद करते हुए खाएँ। केवल अपने हक का खाएँ, बाँटकर खाएँ, चोरी करके, छिपा करके, बेहक का न खाएँ। स्वच्छता से खाएँ, एकाग्रता से खाएँ, धैर्य के साथ चबा-चबा कर खाएँ। लालच से न खाएँ। स्वाद के वश होकर न खाएँ।

कितना खाएँ – भूख से पौना भोजन खाएँ। इतना न खाएँ जो पेट में पड़ा भोजन हमारा ध्यान अपनी ओर खींचता रहे और हम कोई कार्य एकाग्रता से न कर सकें। छीना-झपटी करके न खाएँ। झूठ बोलकर न खाएँ।

कब खाएँ – भूख लगने पर खाएँ, भोजन के समय पर खाएँ, बड़ों और छोटों को मान देकर खाएँ। बार-बार न खाएँ।

जब स्वाद भी कुदरत बनाए और उन्हें भोगने की इन्द्रियाँ भी उसी ने निर्मित की हैं तो प्रश्न उठता है कि स्वाद का त्याग क्यों किया जाए? क्यों न उसका उपयोग किया जाए और आनन्दित हुआ जाए? उसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वाद का आनन्द लिया जाना चाहिए परन्तु उसका गुलाम नहीं बनना चाहिए जिससे उसके न मिलने पर हम परेशानी अनुभव करें और उचित या अनुचित तरीकों से उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। किसी व्यक्ति की गुलामी से बचना आसान कार्य है परन्तु इन्द्रियों की गुलामी से बचना महाकठिन कार्य है। स्वाद में व्यक्ति को गुलाम बनाने की प्रवृत्ति होती है और गुलामी किसी की भी क्यों न हो, त्याज्य होती है।

अन्य इन्द्रियों (श्रवणादि) को जीत लेने पर भी जब तक रसना इन्द्रिय पर विजय प्राप्त न की जाए, मानव जितेन्द्रिय नहीं हो सकता। रसनेन्द्रिय को जीत लेने पर सभी इन्द्रियाँ वश में हो जाती हैं। रसना के द्वारा खाये हुए पदार्थो का अन्य इन्द्रियों सहित सारे शरीर पर प्रभाव पड़ता है। अत: रसना के द्वारा रजोगुणी और तमोगुणी पदार्थों का त्याग कर सत्वगुणयुक्त आहार करने पर सभी इन्द्रियाँ सत्वगुणयुक्त होंगी।

'ग' अर्थात् प्रभु के गुण गाएँ

गुण गाने का अर्थ है परमात्मा पिता के गुणों का स्मरण करें और गुणवान बनें। भगवान गुणों के भण्डार हैं। यदि हम उनके अनेक गुणों में से एक दया के गुण को भी याद कर लें तो मानवता के कष्ट मिटाने में काफी योगदान दे पाएँगे। भगवान अपनी दया का गुण किसी न किसी के माध्यम से ही प्रकट करते हैं। हमें उनका वो माध्यम बनने का सौभाग्य प्राप्त हो, ऐसी शुभकामना रखें।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एक करुणामय और परोपकारी व्यक्ति थे। एक बार उन्हें पता चला कि जयराज नामक दानवीर, परोपकारी, दयालु सज्जन की मृत्यु हो गई है और उसकी स्त्री के पास दाह संस्कार हेतु पैसे तक नहीं हैं।

विद्यासागर जयराज को जानते तक नहीं थे, बस पूछताछ करके उसके घर पहुँच गये। जयराज के मृत शरीर के पास रोती-बिलखती महिला को ढांढ़स बँधाते हुए विद्यासागर ने कहा, भाभी, जय बाबू से मैंने कुछ दिन पूर्व कर्ज लिया था, मैं कुछ रुपये लेकर आ ही रहा था कि यह दुखद समाचार मिला। कृपा करके ये रुपये लीजिए, बाकी मैं धीरे-धीरे चुका दूँगा। जयराज की विधवा ने सधन्यवाद वह राशि ले ली।

भविष्य में भी विद्यासागर जयराज के परिवार के लिए कुछ रुपये भेजते रहे। कुछ वर्षों के बाद जयराज की विधवा को वास्तविकता का पता चला तो वह विद्यासागर के अनूठे झूठ पर चकित रह गयी। अपने लड़कों के साथ विद्यासागर के पास गई। उनके पैरों पर गिरकर रोने लगी और कहा, आपने हमारे लिए इतना बड़ा झूठ बोला, हम इसको कैसे चुका पायेंगे। विद्यासागर बोले, 'यदि झूठ पवित्र हो तो बोलने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए।' बच्चो, दया में डूबा हृदय दूसरों पर परोपकार के लिए ऐसी झूठ बोल दे तो उसका पाप नहीं लगता।

'घ' अर्थात् घमण्ड से बचें

प्यारे बच्चो, नम्र बनने वाले को सब नमन करते हैं। हमारे पास यदि कोई गुण, कला, विशेषता है तो उसे परमात्मा की देन मानकर, सबके हित में लगाएँ। इससे सबकी दुआएँ मिलेंगी और हम बिना मेहनत बहुत आगे बढ़ जाएँगे। कहा जाता है, घमण्डी का सिर नीचा होता है। घमण्डी व्यक्ति उस ऊँचे खजूर के वृक्ष समान होता है

जिसकी छाया और फल राहगीर के काम नहीं आते। इंसान के जीवन का प्रथम लक्ष्य है घमण्ड का विसर्जन और प्रेम, आनंद, शान्ति की प्रस्थापना।

एक राजा के दरबार में जब भी भिक्षु आते थे तो वे हमेशा सभी भिक्षुओं और संन्यासियों के आगे सिर झुकाकर उनका स्वागत किया करते थे। मंत्रियों को यह बात बहुत खटकती थी कि इतने बड़े सम्राट होने के बावजूद वे दीन-हीन भिक्षुओं के आगे सिर क्यों झुकाते हैं।

एक दिन मंत्रियों ने राजा से आग्रह किया कि वे भिक्षुओं के आगे सिर न झुकाया करें क्योंकि इससे उनकी शान घटती है। राजा यह सुनकर मुस्करा दिए। इस घटना के बाद राजा ने अपने मंत्रियों से कहा, 'वे कहीं से तीन मृत पशुओं और एक मृत मनुष्य का सिर लेकर आएँ।' मंत्री इस अजीब आदेश को सुनकर हैरान रह गए लेकिन सम्राट का हुक्म वे कैसे टाल सकते थे? वे चुपचाप जाकर मृत पशुओं और मृत मनुष्य का सिर ले आए। इसके बाद राजा ने अपने मंत्रियों से कहा, 'वे बाजार में जाएँ और चारों सिरों को बेच आएँ। दाम चाहे जितने मिलें लेकिन सिर बिकने चाहिएँ।'

मंत्रियों ने शाम को लौटकर बताया कि 'पशुओं के सिर तो बिक गए लेकिन इंसान का सिर बिक नहीं पाया।' यह सुनकर राजा ने उनसे कहा, 'वे जाकर किसी को इंसान का सिर मुफ्त में दे आएँ।'

मंत्रियों ने लौटकर कहा, 'इंसान के सिर को कोई मुफ्त में लेने को भी तैयार नहीं है।' राजा ने मुस्कराते हुए मंत्रियों से कहा, 'अब आप सभी को समझ में आ गया होगा कि इंसान के सिर का मूल्य क्या है। कोई इसे मुफ्त में भी नहीं लेना चाहता तो इसका अर्थ है कि यह मूल्यहीन है। फिर इससे क्या फर्क पड़ता है कि यह किसी के सामने झुकता है या किसी के कदमों में गिरता है।' मंत्रियों को बात समझ में आ गई और उन्होंने दोबारा कभी राजा की विनम्रता के बारे में कोई सवाल नहीं किया।

प्यारे बच्चो, वर्णमाला का हर वर्ण किसी न किसी गुण की ओर इशारा करके उसे जीवन में धारण करने की प्रेरणा देता है जैसे – 'च' से चलते रहने की, 'छ' से छटा बिखेरने की, 'ज' से जीवन का सम्मान करने की, 'झ' से झगड़ा न करने की आदि-आदि। इस बार इतना ही, शेष फिर कभी। ■■■

कैसी यह दीवाली है

■■■ ब्रह्माकुमार निर्विकार श्रीवास्तव, मिश्रिख तीर्थ

बहुत दिनों से मना रहे हैं, कैसी यह दीवाली है।
अन्धकार बढ़ता जाता है, घोर निशा अब काली है।।

घर की खूब सफाई कर मिट्टी का दीप जलाते हैं।
दृष्टि-वृत्ति रख के विकारी, मदिरा गले लगाते हैं।।
जुआ खेलते, कामुकता की जैसे आग लगा ली है।
बहुत दिनों से मना रहे हैं...

आत्मदीप जला करके, न दीप जलाते मिट्टी का।
धन-दौलत और संपत्ति खातिर, गायन करते लक्ष्मी का।।
लक्ष्मी अब तक आई नहीं, घर पड़ा हुआ सब खाली है।
बहुत दिनों से मना रहे हैं...

लक्ष्मी-वाहन देख रोशनी, स्वयं वह अंधा हो जाता।
अपनी मलिका देवी को लेकर, दूर से चंपत हो जाता।।
कभी नहीं आई है अब तक, केवल रस्म बना ली है।
बहुत दिनों से मना रहे हैं...

ज्ञान के घृत को डाल के अब, आत्म-ज्योति को तेज करो।
विषय विकारों पर विजयी बन, पापों से परहेज करो।।
श्रीमत पर चलने के हित, अब शिव से शिक्षा पाली है।
बहुत दिनों से मना रहे हैं...

परम-ज्योति से जोड़ के नाता, मन की ज्योत जगानी है।
63 जन्मों की कमियाँ जो, राजयोग से जलानी हैं।।
आत्म-ज्योति जग जाये, तो समझो सच्ची दीवाली है।
बहुत दिनों से मना रहे हैं...

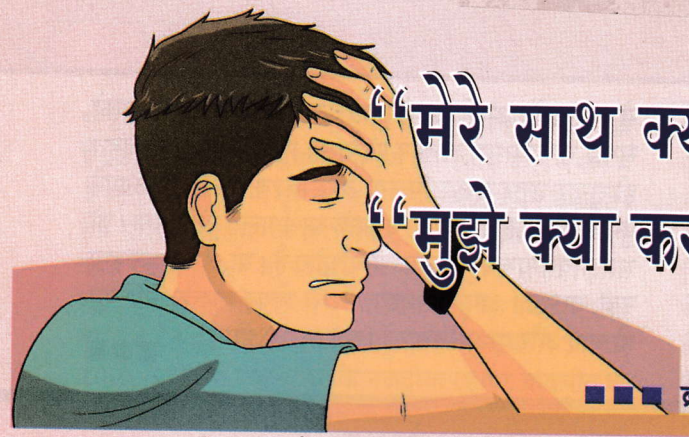

"मेरे साथ क्या हो रहा है" इसे छोड़ "मुझे क्या करना है" इस पर ध्यान दो

ब्रह्माकुमार विनायक, सोलार प्लांट, शान्तिवन, आबू रोड

इस सृष्टिनाटक में कुछ आत्माएँ सफलता पाकर मानव-कुल में उदाहरणमूर्त बन इतिहास रचते हैं। लोग उनकी जयंती मनाते हैं, विद्यार्थियों को उनका चरित्र पढ़ाया जाता है, उनकी प्रतिमाएँ चौराहों पर स्थापित होती हैं, उत्सवों के दिन उन पर माला चढ़ाकर लोग उनका गुणगान करते हैं तथा उनका अनुकरण करने की शपथ लेते हैं। दूसरी तरफ कुछ आत्माओं का जीवन कारागृहों में सलाखों के पीछे या मानसिक अस्पतालों में ऐसे बीत जाता है जैसे कि उनका इस दुनिया में कोई अस्तित्व ही नहीं। मनुष्य-मनुष्य के बीच यह महान अंतर क्यों?

अन्तर है परिस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया का

कैदियों और मानोरोगियों को उनकी इस दुखदाई अवस्था के बारे में एक बार पूछा गया। कैदी कहते हैं, जब हमारे साथ अन्याय हुआ, किसी ने हमारे साथ गलत व्यवहार किया तो हम सहन नहीं कर सके, क्रोध के वश गलत काम कर लिया। मनोरोगी कहते हैं, हमको तकदीर ने साथ नहीं दिया, किसी की मदद नहीं मिली, मित्र-संबंधी दुश्मनी करते रहे, जीवन-साथी ने धोखा दिया, मेरे अच्छे स्वभाव का गलत इस्तेमाल किया गया, सभी मेरा मजाक उड़ाते रहे, मेरा अपमान हुआ, मेरे साथ दुर्व्यवहार हुआ आदि-आदि। इन सब बातों का सार यही निकलता है कि ये हर कदम पर यही देखते रहे कि "मेरे साथ क्या हो रहा है"।

जो सफलता के शिखर पर पहुंचे हैं, जब उन से पूछा गया कि आपकी सफलता का राज़ क्या है, तो उनके उत्तर इस प्रकार थे कि यह मेरा सपना था, समाज का कुछ उपकार करना ही जीवन का उद्देश्य था, हर कदम मुझे मंजिल ही दिखाई देती थी, प्राणों की बाजी लगाकर भी मुझे यह साधना करनी ही थी आदि-आदि। इससे स्पष्ट है कि इतिहास रचने वाले सदा ही सोचते रहे कि "मुझे क्या करना है"।

प्रत्यक्ष उदाहरण

"मुझे क्या करना है" इस महामंत्र ने समाज को कई अमूल्य उपहार प्रदान किये। जिस बालक को निम्न जाति का समझकर पानी छूने से भी समाज ने मना किया था वह बालक भारतीय संविधान का निर्माण कर भारतरत्न डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर कहलाया। मैडम क्यूरी जब बालिका थी तब उनके पास स्कूल में दाखिल होने के लिए भी पैसे नहीं थे, फिर भी, विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक बन दो नोबेल पुरस्कारों की पात्र बनी। बुद्धिमंदता के कारण स्कूल से निकाला हुआ अल्बर्टआइंस्टीन नाम का एक बालक आगे चलकर सापेक्ष सिद्धान्त का पितामह बना। एक बालक के माँ-बाप ने समाज के क्रूर साम्प्रदायिक नियमों के दबाव में आकर जल समाधि ले ली, पर आगे चलकर वह बालक आध्यात्मिक साधना के शिखर पर पहुंच संत ज्ञानेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक रीति से इनके साथ अनेक अनुचित घटनाएँ घटी लेकिन आश्चर्य तो इस बात का है कि बेहद कष्टकर परिस्थितियों में भी इन्होंने अपनी साधना को जारी रखा और असम्भव को सम्भव में परिवर्तित किया। इस उपलब्धि का आधार केवल एक ही लक्ष्य पर इनकी एकाग्रता थी कि "मुझे क्या करना है"।

एक हानिकारक निर्णय

एक साधारण मानव को जीवन में यदि प्यार और सहयोग मिलता है तो वह औरों को भी ये सब देना चाहता है परन्तु अगर उसके साथ अन्याय हुआ, दुर्व्यवहार हुआ या वह ठगी का शिकार हुआ तो वह भी इन्हीं दुर्गुणों के मार्ग पर चलना चाहता है। 'जब मुझ पर समाज ने अपकार किया तो मैं उस पर क्यों उपकार करूँ', ऐसा सोचकर वह समाज से बदला लेने या समाज को सबक सिखाने का

निर्णय ले लेता है। लेकिन यहाँ दो कटु सत्य जानने आवश्यक हैं। पहला सत्य, बदला लेकर सबक सिखाना, यह विधि इस सृष्टि-नाटक में यथार्थ नहीं है, इस विधि से किसी में भी परिवर्तन नहीं आ सकता। अगर परिवर्तन आता भी है तो वह नकारात्मक होगा, न कि सकारात्मक। इस विधि को अपराध कहा जाता है, न कि समाज सेवा। दूसरा सत्य, दूसरों को सबक सिखाने के पीछे 'मुझे क्या करना है' इस बात को भूल 'जो हो रहा है' उसी जाल में हमारा अमूल्य समय नष्ट हो जाता है अर्थात् आयु नष्ट हो जाती है जिसको हम कभी वापस पा नहीं सकते।

जो व्यक्ति अपने साथ होने वाली बातों को ही महत्व देता है, वह सृष्टि-नाटक का खलनायक बन जाता है और करने वाली बातों पर ध्यान देकर जो सुकर्म करता है, वह सृष्टि-नाटक का हीरो बन जाता है।

आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले पुरुषार्थियों के सामने आपसी संस्कारों का टकराव, सुविधाओं का अभाव, असहनीय बातों का सामना आदि के रूप में कभी भी विघ्न प्रकट हो सकता है। तब कई बार, ज्ञान की धारणाओं की कमी के कारण, यह संकल्प चल सकता है कि हमने तो सब कुछ त्याग कर आध्यात्मिक जीवन को अपनाया लेकिन लगातार हमारे साथ ऐसी बातें क्यों हो रही हैं, जो होनी नहीं चाहिएँ? साथ-साथ एक नकारात्मक संकल्प यह भी उठेगा कि शायद मैं आज्ञाकारी, नम्र, शान्तस्वरूप होकर चलता हूँ इसीलिए मेरे साथ ऐसी बातें घटती हैं, परन्तु अब से आगे मुझे कड़क होकर रहना है, झुकना नहीं है। इस विनाशकारी संकल्प के साथ ही आध्यात्मिक जीवन का पतन आरंभ होता है। यह संकल्प अकल्याणकारी भविष्य का बीज है।

ज्ञान के सागर परमात्मा शिवपिता ने कर्म की इस गुह्यगति को स्पष्ट किया है कि दुख का कारण हमारे पूर्वजन्मों के कर्म हैं जो चुक्ता होने ही हैं। इसमें संपर्क में आने वाले व्यक्ति या स्थान का कोई दोष नहीं है।

जब हम रोज़ाना अपनी दिनचर्या की जांच करते हैं तो एक चिंताजनक बात यह देखने में आती है कि हमारे अधिकतर संकल्प 'जो हो रहा है' उस बात पर केन्द्रित हैं, न कि 'जो करना है' उस पर। इस संस्कार को हमें शीघ्र ही परिवर्तन करना होगा। हमारे पुरुषार्थ का अंतिम लक्ष्य है स्वयंप्रिय,लोकप्रिय और प्रभुप्रिय बनना। जो अपने साथ 'क्या हो रहा है' उन बातों को न देख 'जो करना है' अर्थात् 'कदम-कदम पर शिवपिता के श्रीमत पर चलना है' इस बात पर दृढ़ रहता है, वही उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त कर गायन योग्य और पूजन योग्य बनता है।

एक विद्यार्थी के परीक्षा देने के बाद परीक्षक इस आधार पर मूल्यांकन करता है कि उसने क्या लिखा है, न कि इस आधार पर कि विद्यार्थी के साथ क्या हो रहा था। वैसे ही अंत में धर्मराज केवल यही प्रश्न हमसे पूछेंगे कि तुमने क्या किया? न कि यह प्रश्न कि तुम्हारे साथ क्या हुआ था? ■■■

कहीं गाड़ी छूट न जाए

ब्रह्माकुमार मदनमोहन, ओ.आर.सी, दिल्ली

जल्दी कर लो भाई, संगमयुग की गाड़ी छूटने वाली है।
निकल गई एक बार अगर तो, फिर न रुकने वाली है।।

आखिरी सीटी बज चुकी है, क्या देख रहे हो इधर-उधर।
पीछे छोड़ जिसे आये, फिर क्यों जाती है नज़र उधर।।

कहते अब भगवन, हे बच्चे, अब न चलेंगे नाज़ और नखरे।
पैकिंग हो सम्पूर्ण तुम्हारी, संकल्प रहें न कोई बिखरे।।

अन्तर्मुखता की सीट पे बैठो, शिव साजन के हाथ में हाथ।
शुभ-चिन्तन का हो तकिया, करो सफर की अब शुरुआत।।

पुरुषार्थ के कदमों को, अब तीव्र तुम्हें करना होगा।
सदा अलर्ट और एक्यूरेट, अब तुमको बनना होगा।।

लेके ज्ञान की तलवार, सदा ड्रामा की हो ढाल।
कवच योग का पहना हो, मर्यादा का रहे खयाल।।

परचिंतन की बू से दूर, स्वचिंतन से हो भरपूर।
मुरलीधर की मुरली में, खोये-खोये इस जग से दूर।।

नुमा शाम के योग से भर लें मन में शक्ति अपार।
अमृतबेले अमर भव के वरदानों से हो श्रृंगार।।

मुरली मंथन, मुरली चिंतन, मुरली की हो अमृतधार।
शिव के सिवा कोई न दूजा, शिव ही जीवन का आधार।।

रूहानियत के पंखों से बस अब उड़ते जाएँ।
संगम के अन्तिम पल हैं, कहीं गाड़ी छूट न जाए।।

1. हाथरस (तपस्या धाम) : उ.प्र. के ऊर्जा मन्त्री भ्राता श्रीकांत शर्मा को ब्र.कु.सीमा बहन ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए। **2. शान्तिवन (आबूरोड) :** शान्तिवन अवलोकन के पश्चात् हरियाणा के विधायकगण, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. कोमल भाई तथा ब्र.कु. दीपक भाई के साथ समूह चित्र में। **3.तोदीनगर (सीकर) :** शिव संदेश रथ अभियान का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. अमृत बहन, ब्र.कु. आशा बहन, विधायक भ्राता रतन जलधारी, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष भ्राता पवन मोदी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी भ्राता अजय चौधरी, अतिरिक्त चिकित्सा अधिकारी भ्राता सी.पी. ओला, डॉ. रमेश बुलाटिया तथा अन्य। **4.आगरा (शास्त्रीपुरम) :** चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट स्नेह मिलन के बाद सी.ए. भ्राता मुकेश सिंह कुशवाह, सी.ए. भ्राता शरद पालीवाल, सी.ए. भ्राता विवेक अग्रवाल, ब्र.कु. सरिता बहन तथा अन्य समूह चित्र में। **5.जयपुर (राजापार्क) :** 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के अन्तर्गत सेवा करने वाले ब्र.कु. भाई-बहनें समूह चित्र में। **6.नैनीताल :** भारतरत्न पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त के 135वें जन्मदिवस पर ब्र.कु. नीलम को सम्मानित करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष बहन जीवन्ती भट्ट, बहन शान्ति मेहरा, पूर्व सभासद भ्राता दया बिष्ट तथा अन्य। **7.हाथरस (आनन्दपुरी) :** कमिश्नर भ्राता अजय दीप सिंह, किसान मेले में आयोजित ग्राम सेवा प्रदर्शनी, व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी का शुभारम्भ करते हुए। साथ में हैं ब्र.कु. शान्ता बहन, अपर जिलाधिकारी बहन रेखा एस. चौहान तथा उपजिलाधिकारी। **8.भीलवाड़ा :** मूक-बधिर व सूर नियन अंध विद्यालय में 3डी मॉडल से प्रदर्शनी समझाने के पश्चात ईश्वरीय ज्ञान की ब्रेल लिपि के साथ सूर्यमणि भाई, प्राचार्या सिस्टर लूसिल, ब्र.कु.अमोलक भाई व प्रसन्न मुद्रा में नेत्रहीन छात्र।

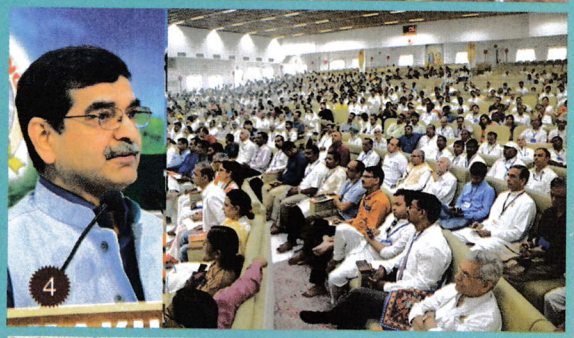

1.पैय्यानूर : शिक्षक दिवस कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए नगरपालिकाध्यक्ष भ्राता शशी वाट्टाकोवल, ब्र.कु. शान्ता बहन तथा अन्य। **2. दावणगेरे:** जीवन कौशल शिक्षा शिविर का उद्‌घाटन करते हुए प्राचार्य भ्राता राजू जी, वरिष्ठ व्याख्याता भ्राता नागराज, ब्र.कु. राजेश्वरी बहन, ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य। **3.बैंगलोर (बसवनगुड़ी) :** 'स्वच्छता ही सेवा है' कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. अम्बिका बहन, डॉ. बालू, स्वास्थ्य अधिकारी तथा अन्य। **4.शांतिवन :** मीडिया सम्मेलन में '' नवयुगीन मीडिया: अवसर और चुनौतियां'' विषय पर सभा को सम्बोधित करते हुए भ्राता अजय कुमार रॉय, डी.डी.जी. ग्राम व्यवसाय और योजना विंग, डाक विभाग, भारत सरकार। **5.पदमपुर :** श्रीकरनपुर बॉर्डर पर सहायक कमांडर भ्राता देवदत्त शर्मा, भ्राता प्रशांत शर्मा एवं अन्य जवानों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ब्र.कु. वंदना तथा ब्र.कु. शीतल ईश्वरीय स्मृति में। **6.बदनोर (भीलवाड़ा) :** मेले में लगी प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. जमुना बहन, सरपंच एकता बहन, पूर्व सरपंच गोपाल जी तथा पत्रकार भ्राता शक्ति सिंह। **7.मजलिस पार्क :** इब्राहिमपुर केशवनगर में वृक्षारोपण करते हुए पार्षद बहन निर्मला राणा, ब्र.कु. राजकुमारी, ब्र.कु. शारदा तथा ब्र.कु. सुष्मिता। **8.रानीबाग :** विधायक भ्राता जितेन्द्र तोमर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सरला बहन। **9. सादड़ी :** जिलाधीश भ्राता सुधीर कुमार शर्मा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शुचिता बहन तथा ब्र.कु. कविता बहन।

दिव्य अनुभूतियों को बढ़ाते चलें

■■■ प्रोफेसर बृजेश गुप्ता, राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता, गाजियाबाद

जैसे-जैसे समय तीव्रगति से कलियुग के अन्तिम छोर की ओर बढ़ रहा है, अनेक प्रकार की अवांछनीय घटनायें भी मानव जीवन को सूक्ष्म और स्थूल रूप से अति प्रभावित कर रही हैं। नित नयी व्याधियों और दुर्घटनाओं के कारण मौत का बाजार चरम सीमा की ओर बढ़ रहा है।

जनसंख्या-विस्फोट, असीमित वाहनों का बढ़ता दबाव, सार्वजनिक यातायात सुविधाओं की लचर व्यवस्था, सुरक्षा नियमों में अनुशासन का अभाव, नाम-मान एवं अहंकारवश वाहन को आगे बढ़ाने की इच्छा ने दुर्घटनाओं में वृद्धि को जन्म दिया है। न केवल सड़क यातायात वरन रेल यातायात भी दुर्घटनाओं से अछूता नहीं रह गया है। अब तो हालात यहाँ तक हो गये हैं कि वायुयान जैसी महंगी एवं सुरक्षित सेवाओं में भी ऐरोप्लेन की एमरजैंसी लैंडिंग करानी पड़ती है।

घटना आज से 26 वर्ष पूर्व की है, ईश्वरीय ज्ञान में आये मुझे 5 वर्ष हुये थे। सहारनपुर सेवाकेन्द्र के सौजन्य से माता शाकुम्भरी देवी के दशहरे मेले के शुभ अवसर पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। प्यारे बापदादा की प्रेरणा से, साकार बाबा की पालना प्राप्त भ्राता मेहर सिंह पठानिया के साथ मुझे भी इस बेहद सेवा के निमित्त चुना गया। सेवा समाप्ति के दो दिन पूर्व ही मुझे, प्रदर्शनी की सफल सेवा का समचार दैनिक समाचार-पत्रो में प्रकाशित कराने एवं अपनी लौकिक शैक्षिक सेवा पर पुन: लौटने की अनिवार्यता के कारण शाकुम्भरी देवी से सहारनपुर आना पड़ा।

इस यात्रा के साथी, साकार बापदादा की पालना पाये हुए भ्राता देवव्रत शर्मा त्यागी जी स्कूटर पर मेरे पीछे बैठे थे। सड़क का निर्माण कार्य होने के कारण दोनों ओर गहरे गड्ढ़े तथा नुकीले पत्थरों के ढेर थे। लगभग आधे घण्टे के पश्चात् एक ट्रैक्टर ट्राली को ओवरटेक करने के लिए सामने से तेजी से आती हीरो होन्डा बाइक को मैंने देखा। सड़क का अधिकांश क्षेत्र ट्रैक्टर ट्राली ने घेर रखा था इसलिए मेरे स्कूटर को सुरक्षित स्थान मिलना नामुमकिन था। इस अप्रत्याशित घटना को सामने देख मेरे शरीर का नीचे का भाग सुन्न हो गया क्योंकि स्कूटर को दायीं ओर करने पर ट्रैक्टर से टकराने का खतरा था तथा बायीं ओर गहरे गड्ढ़े में जाने का डर था। मैंने क्षणभर के लिये शिवबाबा को याद किया तथा मेरे मुख से 'बाबा' शब्द निकला।

'बाबा' कहने के साथ ही मैंने एक चमत्कारिक अनुभव किया कि जैसे कोई दिव्य शक्ति मेरे दोनों हाथों में समाकर स्कूटर के हैण्डिल को नियंत्रित कर इसे सीधी दिशा में ले जाने को कह रही हो। बाबा की मदद को कैच करते हुए मैंने सावधानीपूर्वक इस घटना से अपना एवं सहयात्री का बचाव किया। इसी बीच गलत तरीके से ओवरटेक करने वाली बाइक यात्रियों सहित गहरे गड्ढ़ों में जा गिरी। हम सुरक्षित रूप से अपनी यात्रा पर आगे बढ़ चले।

इस लेख के माध्यम से सभी पाठकों को बताना चाहता हूँ कि अब जबकि प्यारे अव्यक्त बापदादा ने 2018 को 'समाप्ति वर्ष' घोषित किया है, तो हम सभी का यह कर्त्तव्य बनता है कि 'बाबा' की अटूट याद से अपनी दिव्य अनुभूतियों को बढ़ाते चलें ताकि भविष्य में आवश्यकता पड़ने पर अचानक कई समस्याओं का अति सहज रीति से समाधान प्राप्त कर उन पर विजय प्राप्त कर सकें। ■■■

सदस्यता शुल्क :

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।

मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, **सह-सम्पादक** - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन।

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :

E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

1.**चण्डीगढ़** : 'हैल्थ एंड हैप्पीनेस फॉर ऑल' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.हेमलता बहन, ब्र.कु.रजनी बहन, मेयर भ्राता देवेश मोदगिल, राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी, भ्राता अमीरचंद जी, पंजाब तथा हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश भ्राता ए. एन. जिंदल तथा अन्य। 2.**मुंबई (घाटकोपर)** : नवरात्रि की झांकी का उद्घाटन करते हुए महाराष्ट्र के पर्यटन मंत्री भ्राता जयकुमार रावल, बहन सुभद्रा रावल, मेयर नैना बहन रावल, लायंस क्लब की अध्यक्षा डॉ. दीप्ति बहन गांधी, ब्र.कु.नलिनी बहन, ब्र.कु.निकुंज, ब्र.कु.विष्णु बहन तथा अन्य। 3.**इंदौर** : स्वर्ण जयंती समारोह का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. आरती बहन, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.राजू भाई तथा अन्य वरिष्ठ बहनें। 4.**कन्नौज** : महिला सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश की खनन तथा आबकारी राज्यमंत्री बहन अर्चना पांडे, ब्र.कु.सुमनलता बहन, ब्र.कु.विद्या बहन, डॉ. सविता बहन तथा जिला पंचायत अध्यक्षा बहन पुष्पा कटियार। 5. **निरसा** : झारखंड के मुख्यमंत्री भ्राता रघुवर दास को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.जया बहन। 6. **लंदन (लोब्रो)** : ज्ञान-चर्चा के पश्चात् ब्र.कु.प्रकाश भाई, ब्र.कु.सुधीर भाई, ब्र.कु.श्रीनिवास भाई तथा प्रतिभागी भाई-बहनें ईश्वरीय स्मृति में। 7. **दिल्ली (लोधी रोड)** : दिल्ली के मुख्यमंत्री भ्राता अरविंद केजरीवाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पियूष भाई। 8.**कुरुक्षेत्र** : मधुमेह मुक्ति शिविर का उद्घाटन करते हुए डॉ श्रीमंत साहू, हरियाणा के सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण राज्यमंत्री भ्राता कृष्ण कुमार बेदी, ब्र.कु.सरोज बहन तथा अन्य। 9.**वाराणसी** : संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के उप-कुलपति प्रोफेसर राजाराम शुक्ला जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.दुर्गा बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : November, 2018.

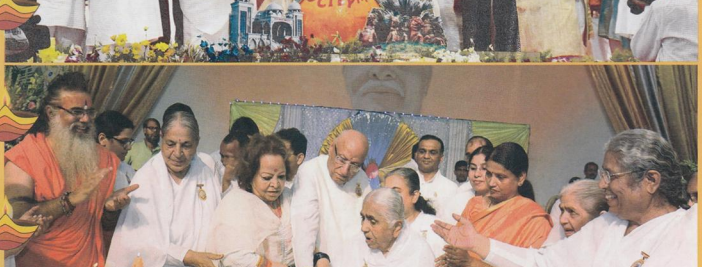

1. **शान्तिवन (आबूरोड)** : विज्ञान, आध्यात्मिकता तथा पर्यावरण पर शिखर सम्मेलन और प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भारत के मुख्य न्यायाधीश भ्राता दीपक मिश्रा, गृहमन्त्री भ्राता राजनाथ सिंह, राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी, अमेरिका की टी.वी. कलाकार तथा अभिनेत्री बहन मारला मैपल, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.मृत्युन्जय भाई तथा अन्य। 2. **जामठा (नागपुर)** : 'विश्व शान्ति सरोवर' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी, ऊर्जा मन्त्री भ्राता चन्द्रशेखर बावनकुले, मेयर बहन नन्दा जिचकर, सांसद डॉ. विकास महात्मे, विधायक भ्राता मिलिंद माने, विधायक डॉ. परिणय फुके, ब्र.कु.सन्तोष, ब्र.कु. कुलदीप, ब्र.कु.रजनी तथा अन्य। 3. **ओ.आर.सी.(दिल्ली)** : खुशनसीब भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी, केन्द्रीय कृषि तथा किसान कल्याण राज्यमंत्री बहन कृष्णा राज, स्वामी धर्मदेव महाराज, ब्र.कु.भ्राता बृजमोहन भाई, बहन सलमा अन्सारी, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.शुक्ला बहन तथा अन्य।